# तुलसीसतसई

महात्मा गोस्वामितुलसीदासजी रचित

नानाप्रकार के नीतिशास्त्रग्रन्थों से छांटकर सात
सौ अत्यन्त रमणीय दोहाओं में नीति
वर्णन की गई है ॥

पूर्वोक्त महात्मा गोस्वामितुलसीदासजीने भाषा
नीतिशास्त्रानुरागियों के निमित्त अत्यन्त
परिश्रम से रचना कियाहै ॥

छठवींबार

लखनऊ
सुपरिन्टेन्डेन्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी





# तुलसीसतसई

॥ दोहा ॥

नमो नमो श्रीरामप्रभु परमातम परधाम ।
जेहिसुमिरतसिधिहोतहै तुलसीजनमनकाम १॥
राम बाम दिशि जानकी लषण दाहिनी ओर।
ध्यानसकलकल्याणकर तुलसीसुरतरुतोर २॥
परमपुरुष परधामकर जापर अपर न आन ।
तुलसी सो समुझत सुनत राम सोई निर्वान ३
सकलसुखद गुणजासु सो राम कामना
सकलकामप्रद सर्वहित तुलसी कहहिं श

जाके रोमै रोमप्रति अमित अमित ब्रह्मण्ड ।
सोदेखततुलसीप्रकट अमलसुअचलप्रचण्ड ५ ॥
जगतजननि श्रीजानकी जनक राम शुभरूप ।
जासुकृपाअतिअघहरणि करणिविवेकअनूप ६ ॥
तात मातु पर जासुके तासु न लेश कलेश ।
ते तुलसीतजिजातकिमि तजिघरतरपरदेश ७ ॥
पिता विवेक निधान वर मातु दया युत नेह
तासु सुवन किमि पाइहैं अनत अटन तजि गेह ८॥
बुद्धि विनयगति हीनशिशु सुपथकुपथगतजान ।
जननिजनकतेहिकिमितजैतुलसीसरिसअजान ९
माततात सियराम रुख बुधि विवेक परमान ।
हरतअखिलअघतरुणतरतवतुलसीकलुजान १०
जिन्हते उद्भव वर विभव ब्रह्मादिक संसार ।
गतितासुतिन्हकीकृपातुलसीवदहिविचार ११॥
रवि सीतारामनभ तुलसी उरसि प्रमान ।
शशि
उदितस अथवतनसोकुबलितमकरहान १२॥

तुलसी कहत विचारगुरु रामसरिसनहिं आन।
जासुकृपाशुचिहोतिरुचि विशदविवेकप्रमान १३॥
रारस रूपअनूपअल हरत सकल मलमूल।
तुलसीमर्महियोगलहि उपजतसुखअनुकूल १४॥
रेफरमित परमातमा सहअकार सियरूप।
दीरघमिलिबिधिजीवइवतुलसीअमलअनूप १५
अनुस्वारकारण जगत श्रीकर करन अकार।
मेलत अकारमकारसों तुलसीहरिदातार १६॥
ज्ञान बिरागै भक्तिसह मूरति तुलसी पेषि।
वरणतगतिमतिअनुहरतमहिमाविशदविशेषि १७
नाममनोहरजानि जिय तुलसी करि परमान।
वरण विपर्ययभेदते कहौ सकल शुभजान १८॥
तुलसीशुभकारणसमुझि गहत रामरस नाम।
अशुभहरणशुचिशुभकरणभक्तिज्ञानगुणधाम १९
तुलसीरामसमानवर सपनेहु अपर न आन।
तासुभजनरतिहीनअतिचाहसिगतिपरमान २०॥

अहिरसनाथन धेनुरस गणपति द्विजगुरुबार ।
माधवसितसियजनमतिथिसतसैयाअवतार २१॥
भरणहरणअतिअमितविधि तत्त्वअर्थकविरीति ।
संकेतिकसिद्धान्तमत तुलसीबदनबिनीति २२
विमलबोधकारण सुमति सतसैया सुखधा
गुरुमुखपढ़िगतिपाइहैं बिरतिभक्तिअभिराम २३।
मनभयजर सतलागयुत प्रकट छन्द युतहोइ
सोघटनाशुभदा सदा कहत सुकबिसबकोइ २४।
जतसमान ततवानलघु अपरबेदगुरु मान ।
संयोगादिविकल्पपुनि पदनअन्तकहजान २५॥
दीरघलघुकरि तहँपठव जहँमुखलहि विश्राम ।
प्राकृतप्रकटप्रभावइह जनितबुधाबुधवाम २६॥
दुइगुरुसीता सारगण रामसोगुरु लघु होइ ।
लघुगुरुरमाप्रतच्चगन युगलहुहरगणसोइ २७॥
सहसनाममुनि भनितसुनि तुलसीबल्लभ नाम ।
सकुचतियहहँसिनिरखिसियअरमधुरन्धरराम २८

दम्पति रसरसनादशन परिजन बदन सुगेह।
तुलसीहरहितबरणशिशु सम्पतिसरलसनेह २९॥
हियनिर्गुण नैननसगुण रसना राम सुनाम।
मनहुँपुरटसम्पुटलसनतुलसीललितललाम ३०॥
प्रभुगुणगण भूषणबसन बचन विशेष सुदेश।
रामसुकीरति कामिनी तुलसी करतबकेश ३१॥
रघुबरकीरति तियबदन इवकहै तुलसीदास।
शरदप्रकाशअकाशछबिचारुचिबुकतिलजास ३२
तुलसी शोभत नखतगण शरद सुधाकरसाथ।
मुक्ताभालरभलकजनुरामसुयशशिशुहाथ ३३॥
आतममध्य विबेकबिनु रामभजत अलसात।
लोकसहितपरलोककी अवशबिनाशीबात ३४॥
बरुमराल मानसतजे चन्द्रशीतरवि घाम।
मोरमदादिक जोतजे तुलसी तजे न राम ३५॥
आसन दृढ़आहारदृढ़ सुमति ज्ञानदृढ़होय।
तुलसीबिना उपासना बिनदुलहेकी जोय ३६॥

रामचरण अवलम्ब बिनु परमारथ की आश ।
चाहतबारिदबुन्दगहि तुलसीचढ़नअकाश ३७॥
रामनाम तरुमूल रस अष्टपत्र फल एक ।
युगलसन्तशुभचारिजगकरषतनिगमअनेक ३८
राम कामतरु परिहरत सेवत कलितरु ठूंठ ।
स्वारथपरमारथचहत सकलमनोरथ झूंठ ३९ ॥
तुलसी केवल कामना रामचरित आराम ।
निशिचरकलिकरिनिहततरुमोहिकहतविधिवाम४०
स्वारथ परमारथ सकल सुलभएकही ओर ।
द्वारदूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ४१ ॥
हितसनहितरति रामसन रिपु सन बैर विहाव ।
उदासीन संसारमन तुलसी सहज सुभाव ४२ ॥
तिलपर राखै सकलजग विदित विलोकत लोग ।
तुलसी महिमा रामकी को जगजानन योग ४३ ॥
जहांरामतहँ काम नहिं जहांकाम नहिं राम ।
तुलसी कबहीं होतनहिं रविरजनी इकठाम ४४ ॥

रामदूर माया प्रबल घटति जानि मनमाहिं।
बढ़तिभूरिरविदूरि लखिशिरपरपगुतरछाहिं ४५॥
सम्पति सकल जगत्त की श्वासा समनहिंहोय।
श्वाससोछतजिरामपदतुलसीअलग न खोय ४६॥
तुलसी सो अति चतुरता रामचरण लवलीन।
परमनपरधन हरणकहँ गणिका परमप्रवीन ४७॥
चतुराई चूल्हेपरै यमगहि ज्ञानहि खाय।
तुलसी प्रेम न रामपद सब जर मूलनशाय ४८॥
प्रेम शरीर प्रपंचरुज उपजी बड़ी उपाधि।
तुलसी भली सो बैदई बेगि बांधई ब्याधि ४९॥
रामविटपतर विशद वर महिमा अगम अपार।
जाकहँ जहँलगि पहुँचहै ताकहँतहँ लगिडार ५०॥
तुलसी कोशल राजभजु जनिचितवै कहुँ ओर।
परणराममयङ्कमुखकरनिज नयन चकोर ५१॥
ऊँचे नीचे कहुँ मिलै हरिपद परम पियूष।
तुलसी काम मयूखतै लागै कौनेउ रूख ५२॥

स्वामी होनो सहज है दुर्लभ होनो दास।
गाडरलाये ऊनको लागी चरै कपास ५३॥
चलबनीति मगरामपद प्रेम निबाहब नीक।
तुलसी पहिरिय सो बसन जोनथबारतफीक ५४॥
तुलसी रामकृपालुते कहि सुनाव गुण दोष।
होउ दूबरी दीनता परमपीन सन्तोष ५५॥
सुमिरन सेवन रामपद रामचरण पहिचान।
ऐसेहुँलाभन ललकमन तौतुलसी हितहान ५६॥
सब संगी बाधक भये साधक भये न कोय।
तुलसीराम कृपालुतें भली होय सो होय ५७॥
तुलसी मिटै न कल्पना गये कल्पतरु छाँह।
जबलगिद्रवै न करिकृपा जनकसुताको नाँह ५८॥
विमलविलगसुखनिकटदुखजीवनसमयसुरीति।
रहित राखिये रामकी तजेतेउचितअनीति ५९॥
जायकहब करतूति बिनु जाययोग बिन छेम।
तुलसी जाय उपाय सब बिनारामपदप्रेम ६०॥

तुलसी रामहिं परिहरे निपट हानि सुनु ओद।
जिमिसुरसरिगत सलिलवर सुरासरिसगंगोद ६१॥
हरे चरहिं तापहिं बरे फरे पसारहिं हाथ।
तुलसी स्वारथमीत जग परमारथ रघुनाथ ६२॥
तुलसी खोटे दासकर राखत रघुबर मान।
ज्यों मूरख पूरोहितहि देत दान यजमान ६३॥
ज्यों जग बैरी मीनको आपु सहित परिवार।
त्यों तुलसी रघुनाथबिन आपनिदशाविचार ६४॥
तुलसी रामभरोस शिर लिये पाप धरिमोट।
ज्योंब्यभिचारीनारिकहँबड़ीखसमकीओट ६५॥
स्वामी सीतानाथ जी तुम लगि मेरी दौर।
तुलसी कागजहाज़को सूझत और न ठौर ६६॥
तुलसी सबछल छांड़िके कीजे राम सनेह।
अन्तर पति सों है कहा जिनदेखी सबदेह ६७॥
सबहीको परखे लखे बहुत कहेका होय।
तुलसी तेरो रामतजि हितजग और न कोय ६८॥

तुलसी हमसों रामसों भलो मिलो है सूत।
छांड़ेबनैन सँगरहे ज्यों घरमाहैं कपूत ६९॥
कोटि विघन संकट बिकट कोटि शत्रु जो साथ।
तुलसी बल नहिं करिसकैं जो सुदृष्टरघुनाथ ७०॥
लगन मुहूरत योगबल तुलसी गनत न काहि।
रामभये जेहिदाहिने सबै दाहिने ताहि ७१॥
प्रभु प्रभुता जा कहँदई बोल सहित गहि बांह।
तुलसीते गाजतफिरहिं राम छत्र की छांह ७२॥
साधन सांसति सब सहत सुमनसुखदफललाहु।
तुलसीचातकजलदकीरीझिबूझिबुधकाहु ७३॥
चातकजीवन जलदकहँ जानत समय सुरीति।
लखतलखतलखिपरतहैतुलसीप्रेमप्रतीति ७४॥
जीव चराचर जहँलगे है सबको प्रिय मेह।
तुलसी चातकमनबसो घनसों सहज सनेह ७५॥
डोलत विपुल विहंगबन पियतपोखरी बारि।
सुयशधवलचातकनवलतोरभुवनदशचारि ७६॥

मुखमीठे मानसमलिन कोकिल मोर चकोर।
सुयशललितचातकवलितरहोभुवनभरितोर७७॥
मांगतडोलत है नहीं तजि घर अनत न जात।
तुलसी चातक भक्त की उपमा देत लजात ७८॥
तुलसी तीनों लोकमहँ चातकही को साथ।
सुनियतजासु न दीनता किये दूसरे नाथ ७९॥
प्रीति पपीहा पयद की प्रकट नई पहिचान।
याचक जगत अधीनइन कियेकनौड़ोदान ८०॥
ऊंची जान पपीहरा नीचो पियत न नीर।
कैयांचे घनश्यामसों कै दुखसहै शरीर ८१॥
कैवरषै घनसमय शिर कैभरिजनम निराश।
तुलसी चातक याचकहिं तऊतिहारीआश ८२॥
चढ़त न चातक चितकबहुँ प्रियपयोद के दोष।
याते प्रेम पयोधि बर तुलसी योगन दोष ८३॥
तुलसी चातक मांगनो एक एक घनदानि।
देत सो भूभाजनभरत लेतघूंटभरिपानि ८४॥

ह्वैअधीन याचत नहीं शीशनाय नहिंलेय।
ऐसेमानी मांगनहिं कोवारिद बिन देय ८५॥
पविपाहनदामिनि गरज अति झकोरखरखीझि।
दोषनप्रीतमरोषलखि तुलसी रागहिरीझि ८६॥
कोन जियाये जगतमहँ जीवनदायक पानि।
भयो कनौड़ो चातकहिंपयदप्रेमपहिचानि ८७॥
मानराखिबो मांगिबो पियसों सहज सनेह।
तुलसीतीनोंतबफबैं जबचातक मनलेह ८८॥
तुलसी चातकहीफबैं मान राखिबो प्रेम।
वक्रबूंदलखिस्वातिको निदरिनिबाहतनेम ८९॥
उपल बरषि गरजत तरजि डारत कुलिशकठोर।
चितवकिचातकजलदतजिकबहुँआनकीओर९०
बरषि परुष पाहन जलद पक्षकरै टुकटूक।
तुलसीतदपि न चाहिये चतुरचातकहि चूक ९१॥
रटत रटत रसनालटी तृषा सूखिगो अंग।
तुलसीचातकके हिये नितनूतनहितरंग ९२॥

गंगा यमुना सरस्वती सातासिन्धु भरिपूर।
तुलसी चातकके मते बिनस्वाती सबधूर ९३॥
तुलसी चातकके मते स्वाती पियत न पानि।
प्रेमतृषाबढ़ती भली घटे घटेंगी कानि ९४॥
सरसरिता चातक तजे स्वाती सुधिनहिं लेइ।
तुलसीसेवकवशकहा जो साहब नहिं देइ ९५॥
आश पपीहा पयद की सुनु हो तुलसी दास।
जो अँचवैजलस्वातिको परिहरिबारहमास ९६॥
चातक घन तजि दूसरे जियत न नाईनारि।
मरत न मांगे अर्द्धजल सुरसरिहू को बारि ९७॥
व्याधाबधो पपीहरा परो गंग जल जाय।
चोंचमूंदिपीवैनहीं धिगपिय मों प्रणजाय ९८॥
बधिक बधो परिपुरय जल उपर उठाई चोंच।
तुलसी चातक प्रेमपट मरत न लायो खोंच ९९॥
चातक सुतहि सिखावनित आननीर जनिलेहु।
येहमरेकुलकोधरम एकस्वाति सों नेहु १००॥

दरशनपरशन आनजल विनुस्वाती सुनुतात।
सुनतचेचुवाचितचुभो समुझिनीतिवरबात१०१
तुलसी सुतसे कहतहैं चातक बारम्बार।
तातन तरपन कीजियो बिना बारि धरबार१०२॥
बाज चंगु गत चातकहि भई प्रेमकी पीर।
तुलसीपरबस हाड़मम परिहै पुहुमीनीर १०३॥
अण्डफोरि किय चेचुवा तुषापरोनी हार।
गहिचंगुल चातकचतुरडारयोबाहिरबार १०४॥
होय न चातक पातकी जीवन दानिन मूढ़।
तुलसीगतिप्रहलादकीसमुझिप्रेमपदगूढ़१०५॥
तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पियास।
पियतस्वातिजलजानजगतावतबारहमास १०६
एक भरोसो एकबल एक आश विश्वास।
स्वातिसलिलरघुनाथवरचातकतुलसीदास१०७
आल बाल मुक्काहलनि हिय सनेह तरु मूल।
हेरुहेरुचितचातकहिस्वातिसलिलअनुकूल१०८

राम प्रेम बिन दूबरे राम प्रेम सह पीन।
विशदसलिलसरवरकरनजनतुलसीमनमीन१०९
आप बधिक वरवेषधरि कहै कुरंगम राग।
तुलसी ज्यों मृगमनमुरै परैप्रेम पटदाग ११०॥
इति सप्तशतिकायांप्रेमभक्तिनिर्देशःप्रथमःसर्गः १॥

॥ दोहा ॥

खेलत बालक व्याल सँग पावक मेलत हाथ।
तुलसी शिशुपितुमातु इव राखत सियरघुनाथ १॥
तुलसी केवल रामपद लागे सरल सनेह।
तौ घर घट बनबाट महँ कतहुँ रहे किनदेह २॥
कै ममता करु राम पद कै ममता करु हेल।
तुलसी दो महँ एकअब खेलछांड़िछलखेल ३॥
कै तोहिं लागहिं रामप्रिय कैतु रामप्रियहोहि।
दुइमहँउचितसुगमसमुझितुलसीकरतबतोहि४॥
रावणारिके दास सँग कायर चलहिं कुचाल।
खरदूषण मारीचसम मूढ़ भये वशकाल ५॥

तुलसी पति दरबार महँ कमी वस्तु कछुनाहिं।
कर्म्महीन कलपत फिरत चूक चाकरी माहिं ६॥
राम गरीब नेवाज हैं राज देत जन जानि।
तुलसीमनपरि हरतनहिं घुरबिनियांकीबानि ७॥
घरकीन्हें घरहोत है घर छाँड़े घर जाय।
तुलसी घर बन बीचही रहो प्रेम पुरछाय ८॥
राम राम रटिबोभलो तुलसी खता न खाय।
लरिकाई ते पैरिबो धोखे बूड़ि न जाय ९॥
तुलसी बिलम न कीजिये भजिलीजै रघुबीर।
तन तरकशते जातहै श्वास सारिखे तीर १०॥
राम नाम सुमिरत सुयश भाजनभयेकुजाति।
कुतरुकुसुरपुरराजबन लहतभुवनविख्याति ११॥
नाम महातम साखि सुनु नरकी केतिक बात।
सरवर पर गिरिवर तरे ज्यों तरुवर के पात १२॥
ज्ञान गरीबी गुण धरम नरम वचन निरमोष।
तुलसी कबहुँ न छांड़िये शील सत्य संतोष १३॥

अशन बसनसुतनारि सुख पापिहु के घरहोइ॥
संतसमागमरामधन तुलसी दुर्लभ दोइ १४॥
तुलसी तीरहिके बसे अवशिपाइये थाह।
वेगहि जायनपाइये सरसरिता अवगाह १५॥
डगअन्तरमगअगमजल जलनिधिजलसंचार।
तुलसी करियाकर्मबश बूड़त तरतनवार १६॥
तुलसीहरि अपमानते होत अकाज समाज।
राजकरतरजमिलिगयोसदलसकुलकुरुराज १७॥
तुलसी मीठे वचनते सुखउपजत चहुँ ओर।
वशीकरणयक मंत्रहै परिहरुवचन कठोर १८॥
रामकृपाते होतसुख रामकृपा बिन जात।
जानतरघुबरभजनते तुलसीशठ अलसात १९॥
सन्मुखह्वै रघुनाथके देहु सकल जगपीठि।
तजेकेचुरीउरगकहँ होतअधिकअतिडीठि २०॥
मरयादा दूरहि रहे तुलसी किये बिचार।
निकट निरादर होतहै जिमिसुरसरिवरवार २१॥

रामकृपानिधिस्वामि मम सबविधि पूरणकाम।
परमारथपरधामवर सन्तसुखद बलधाम २२॥
रामहिजानहि रामरट भजुरामहि तजुकाम।
तुलसीराम अजाननर किमिपावहिं परधाम २३॥
तुलसी पतिरतिअंकसम सकलसाधना सून।
अंकरहितकछुहाथनहिं सहितअंकदशगून २४॥
तुलसी अपने रामकहँ भजनकरहु इकअङ्क।
आदिअन्त निरबाहिबो जैसे नवको अङ्क २५॥
दुगुणे तिगुणे चौगुणे पञ्च षष्ठ औसात।
आठौते पुनि नवगुणे नवके नव रहिजात २६॥
नवके नवरहि जातहैं तुलसी किये विचार।
रमोराम इमिजगत में नहीं द्वैत विस्तार २७॥
तुलसीराम सनेहकरु त्यागु सकल उपचारु।
जैसे घटतन अङ्कनव नवके लिखत पहारु २८॥
अङ्क अगुण आखरसगुण समुभउउभयप्रकार।
खोयेराखे आपभल तुलसी चारु विचार २९॥

यहिविधिते सबराममय समुझहुसुमतिनिधान।
यातेसकलविरोधतजु भजुसबसमुझुनआन ३०॥
रामकामनाहीन पुनि सकलकाम करतार।
याहीते परमातमा अव्यय अमल उदार ३१॥
जो कछु चाहत सो करत हरतभरत गत भेद।
काहुसुखद काहूदुखद जानतहैं बुध वेद ३२॥
सन्तकमल मधुमासकर तुलसी बरण विचार।
जगसरवरतरभरणकर जानहुजल दातार ३३॥
एकसृष्टिमहँ जाहिविधि प्रकट तीनितर भेद।
सात्विकराजसतमसहित जानतहैंबुधवेद ३४॥
ताविधि रघुवरनाम कहँ वर्त्तमान गुणतीन।
चन्द्रभानअपिअमलविधिहरिहरकहहिंप्रवीन ३५
अनलरकार अकाररवि जानुमकार मयङ्क।
हरीअकाररकारविधि मनमहेशानिःशङ्क ३६॥
वननज्ञानकहँ दहनकर अनल प्रचण्डरकार।
हरिअकारहरमोहतम तुलसीकहहिं विचार ३७॥

त्रिविधताप हरशशिसतर जानहुपरम मकार।
विधिहरिहरगुणतीनिको तुलसीनामअधार३८॥
भानुकृशानु मयङ्कको कारण रघुवर नाम।
विधिहरिशम्भुशिरोमणीप्रणातसकलसुखधाम३९
अगुणअनूपम सगुणनिधि तुलसीजानतराम।
करतासकलजगत्तको भरतासबमन काम ४०॥
छत्रमुकुटसम विद्धिअल तुलसीयुगल हलन्त।
सकलवरणशिरपररहतमहिमाअमलअनन्त४१
रामानुजसद्गुण विमल श्याम राम अनुहार।
भरताभरतसोजगतको तुलसीलसतअकार४२॥
राजत राजसतानु जब वरधरणी धरधीर॥
विधिविहरतअतिआशुकरितुलसीजनगणपीर४३
हरणकरण संकटसतर समरधीर बलधाम।
मामहेशअरिदवनवर लषणअनुजअरिकाम४४॥
रामसदा समशील घर सुखसागर परधाम।
अजकारणअद्वैतनित समतरपदअभिराम ४५॥

होनहार सहजानसब विभव बीच नहिं होत।
गगनगिरह करिबोकवै तुलसीपढ़त कपोत ४६॥
तुलसी होतासिखेनहित तनगुण दूषण धाम।
भषणसिखिनकग्रनेकहाॅप्रकटविलोकहुकाम ४७॥
गिरतेअण्डसम्पुटअरुण जलजपत्र अनयास।
अलसुवनउपदेशकेहिजातसुउलटिअकास ४८
विविधचित्र जलपत्रविच अधिक नूनसममूर।
कवकौनेतुलसीरचे केहिविधि पत्तमयूर ४९॥
काकसुतागृहना करे यह अचरज बड़वाय।
तुलसीकहिउपदेशसुनिजनितपिताघरजाय ५०॥
सुपथकुपथ लीन्हे जनित स्वस्वभाव अनुसार।
तुलसीसिखवतनाहिंशिशु मूषकहननमजार ५१॥
तुलसीजानत हैं सकल चेतनामिलत अचेत।
कीटजातउड़िलियनिकट विनाहिपढ़ेरतिदेत ५२॥
होनहार सब आपुते वृथाशोच कर जौन।
कउभृंग तुलसीमगन कहहु उमेठत कौन ५३॥

मुख चाहत सुखमें बसत है सुखरूप विशाल ।
सन्ततजाविधिमानसर कबहुंनतजतमराल ५४ ॥
नीतिप्रीतियश अयशगतिसबकहँ शुभपहिचान ।
हस्ती हस्ती हस्तिनी देतनपतिरति दान ५५ ॥
तुलसी अपने दुखदते कोकहु रहत अजान ।
कीशकंतअंकुरबनहिं उपजत करतनिदान ५६ ॥
यथाधरणि सबबीजमें नखत अकाश निवास ।
तथारामसब धर्म्ममय जानत तुलसीदास ५७ ॥
पृहुमीपानी पावकहु पवनहु माहँ समात ।
ताकहँजानतरामअपिबिनुगुरुकिमिलखिजात५८
अगुण ब्रह्मतुलसी सोई सगुणबिलोकत सोइ ।
दुखसुखनानाभांतिको तेहिबिरोधते होइ ५९ ॥
शूर यथा गणजीतिअरि पलटिआव चलिगेह ।
तिमिगति जानहि रामकी तुलसीसंतसनेह ६० ॥
परमातम पद रामपुनि तीजे संत सुजान ।
जेजगमहँफिर चहिंधरे देहबिगत अभिमान ६१ ॥

चौथी संज्ञा जीवकी सदा रहत रतकाम।
ब्रह्मण सेतनरामपद निशिवासरवशवाम ६२॥
सुखपाये हरषत हँसत खीझत लहे बिषाद।
प्रकटतदुरतनिरयपरत केवलरतविषस्वाद ६३॥
नाना विधिकी कल्पना नानाविधि कोभोग।
सूक्षमऔअस्थूलतनकबहुं तजत नहिंरोग ६४॥
जैसेकुष्ठीकी सदा गलित रहत दोउ देह।
बिन्दहुकी गतितैसिये अन्तरहू गति एह ६५॥
त्रिधादेह गति एक विधि कबहूं ना गति आन।
विविध कष्टपावतसदा निरखहिंसन्तसुजान ६६॥
रामहिं जाने संतवर संतहि राम प्रमान।
संतनके बलराम प्रभु रामहिं संतन आन ६७॥
ताते संत दयालुवर देहिं राम धन रीति।
तुलसी यह जियजानिके करियतहठिअतिप्रीति६८
तुलसी संत सुअम्ब तरु फूलि फरहिं पर हेतु।
इतते ये पाहन हनें उतते वे फल देतु ६९॥

दुख सुखदोनों एकसम सन्तन के मनमाहिं।
मेरुउदधिगतिभकुरजिमिभारभीजिबोनाहिं७०॥
तुलसी राम सुजानको रामजनावै सोइ।
रामहिं जानै रामजन आन कबहुँ नाहोइ ७१॥
सोगुरुराम सुजासु सम नहीं विषमता लेश।
ताकी कृपा कटाक्षते रहे न कठि न कलेश ७२॥
गुरु कहँ तव समभैसुनै निज करतव करभोग।
कहतव गुरु करतबकरे मिटै सकलभवसोग ७३॥
शरणागततेहि रामके जिन्ह हियधी सिय रूप।
जापदनीघर उदय भय नाशौ भ्रमतम कूप ७४॥
जापद पाये पाइये आनँद पद उपदेश।
संशय शमन नशायसब पावैपुनिनकलेश ७५॥
मेधासीता सम समुझ गुरु विवेक समराम।
तुलसीसिय समसोसदाभयोकिगतमगवाम७६॥
आदि मध्य अवसानगति तुलसी एकसमान।
तेईसन्तसरूपशुभ जेअनीत गति आन ७७॥

एई शुद्ध उपासना परा भक्तिकी रीति।
तुलसी यहि मगुपगुधरे रहेरामपदप्रीति ७८॥
तुलसी बिनगुरु देवके किमि जानै कहु कोय।
जहँतेजोआयो सोई जाय जहांहै सोय ७९॥
अपमतयेसोई अवनि सोपुनि प्रकट पताल।
कहांजनमअधिमरणमपिसमु झहिंसुमतिरसाल ८०
संग दोषते भेद अस मधुमदिरा मकरन्द।
गुरुगमतेदेखहिं प्रकट पूरण परमानन्द ८१॥
डाबर सागर कूपगत भेद दिखाई देत।
हैएकै दूजैनहीं द्वैत आनके हेत ८२॥
गुणगत नानाभांति तेहि प्रकटत कालहिपाय।
जानजाय गुरु ज्ञानते बिनजाने भरमाय ८३॥
तुलसीतरु फूलत-फलत जाबिधिकालहि पाय।
तैसेहीगुण दोषते प्रकटत समय सुभाय ८४॥
दोषहुगुणकी रीतियह जानुअनल गतिदेखि।
तुलसी जानतसोसदा जेहिविवेकसुविशेखि ८५॥

गुरुते आवत ज्ञानउर नाशतसकल विकार ।
यथानिलयगतिदीपकैमिटतसकलअँधियार८६॥
यद्यपिअवनि अनेकसुख तोयतासुरसताल ।
सन्तततुलसीमानसर तदपिनतजहिंमराल ८७॥
तुलसी तोरत तीरतरु मानसजहँसविहार ।
बिगतनलिनिअलिमलिनमनसरसरिहूबड़िआर८८॥
जोजल जीवनजगतको परसतपावन जौन ।
तुलसीसो नीचेढरत ताहिनिवारत कौन ८९ ॥
जो करताहै करमको सो भोगत नहिं आन ।
बवनहार लुनिहै सोई देनी लहै निदान ९० ॥
रावणरावण कोहन्यो दोषरामकहँ नाहिं ।
निजहितअनहितदेखुकिनतुलसीआपहिमाहिं९१
सुमिरुराम भजुरामपद देखुराम सुनुराम ।
तुलसीसमुझहुरामकहँअहनिशिइहतवकाम ९२
रजअपअनल अनिलनभ जड़जानतसबकोइ ।
इहचैतन्यसदासमुझ काः जरत दुखहोइ ९३ ॥

निजकृत बिलसतसो सदा बिनपाये उपदेश ।
गुरुपगुपायसुमग धरै तुलसी हरै कलेश ९४ ॥
सलिलशुक्रशोणितसमुभ पलअरुअस्थिसमेत ।
बालकुमार युवाजरा हैसुसमुभ करचेत ९५ ॥
ऐसिहिगति अवसानकी तुलसी जानत हेत ।
तातेयहगतिजानिजियअविरलहरिचितचेत९६।
जानैराम स्वरूप जब तबपावै पद सन्त ।
जन्ममरणपदतेरहितसुखमाअमलअनन्त ९७ ॥
दुखदायक जानेभले सुखदायक भजिराम ।
अबहमको संसारको सबविधि पूरणकाम ९८ ॥
आपुहिमदको पानकरि आपुहि होत अचेत ।
तुलसीविविधप्रकारको दुखउतपतियहिहेत९९ ॥
जासोंकरत विरोध हठि कहुतुलसीको आन ।
मोतेंरामननआनतव नाहकह्नोसिमलान १०० ॥
चाहसिसुखज्यहि मारिकै सोतौ मारिन जाय ।
कौनलाभबिषतेबदलि तेतुलसीबिषखाय १०१॥

कोहद्रोह अघमूल है जानत को कहुनाहि।
दयाधर्मकारणसमुझि कोदुखपावततादि १०२॥
बनोबनायो है सदा समुझरहित नहिं शूल।
अरुणबरणकेहिकामको बासबिनाकोफूल १०३॥

इति श्रीमद्गोसाईंतुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकाया
मुपासनपराभक्तिनिर्देशोनामद्वितीयःसर्गः २॥

॥ दोहा॥

जनकसुतादशयान सुत उरग ईश अमजौरि।
तुलसिदासदशपदपरखि भवसागरगयोपौरि १॥
तुलसी तेरो रोगखर तात मात गुरुदेव।
तातजितोहींउचित अब रुचितआनपदसेव २॥
तर्कविशेषि निषेधपति उरमानसु सुपुनीत।
बसतमरालकलरहितकरितेहिभजुपलटिबिनीत३
शुक्लादिहिकल देहुइक अन्त सहित सुखधाम।
देकमलाकलअन्तको मध्यसकल सुखदाम ४॥
बीजधनंजयरवि सहित तुलसी तथा मयंक।

प्रकटतहांनहिंतमतमी समचित रहतअशंक ५॥
रंजनकानन कोकनद बंश विमल अवतंस।
गंजनपुरहुतअरिसदल जगहित मानसहंस ६॥
जगतेरहु छत्तीस ह्वै रामचरण छत्तीन।
तुलसीदेखु विचारिहिय हैयहमतो प्रबीन ७॥
कन्दिन दून नछत्र हानि गनी अनुज तेहि कीन्ह।
जेहिहरिकरमनिमानहनितुलसीतेहिपदलीन्ह ८॥
शिला आयुमोचक वरण हरणमकल जंजाल।
भरणकरणसुख सिद्धितर तुलसी परमकृपाल ९॥
मरणविपति हरधरधरम धराधरण बलधाम।
शरणतासुतुलसीचहतवरणअखिलअभिराम १०
विहगवीचरैयत त्रितय पतिपति तुलसीतोर।
तासुविमुखसुखअतिविषमसपनेहुहोतनमोर ११
द्वितियकोलराजिव प्रथम बाहुननिश्चयसाहि।
आदिएककलदेभजहु वेदविदितगुणनाहि १२॥
बमतजहां राघवजलज लेहिमिति गोजहिसंग।

भजुतुलसीतेहिअरिसुपदकरिउरप्रेमअभंग १३ ॥
भजहु तरणिअरिआदिकहँतुलसी आत्मजअन्त।
पंचाननलहि पदममथि गहेविमलमन सन्त १४ ॥
वनिता शैल सुतासकी तासु जनमको ठाम ।
तेहिभजुतुलसीदासहितप्रणतसकलसुखधाम १५
भजु पतंगसुन आदिकहँ मृत्युंजय अरिअन्तु ।
तुलसी पुहकर यज्ञकर वरणपाँसुमिच्छन्तु १६ ॥
उलटेतासीता सुपति मोहजार मन स्वस्थ ।
एकसूनरथ तनयकहँ भजसिन मन समरत्थ १७॥
द्वितियतृतिय हरकासनहिं भजुतेहि तुलसीदास ।
काकासनआसनकिये सासन लहे उपास १८ ॥
आदिद्वितिय अवतार कहँ भजुतुलसी नृपअन्त ।
कमलप्रथमअरुमध्यसहवेदाविदितमतसन्त १९ ॥
जेहि नगन्यो कलुमानसहुसुरपतिअरिमोआस ।
तेहिपदशुचिताअवधिभवतेहिभजुतुलसीदास२०॥
नेनकरण गुणधरण वर तावर वरण विचार ।

चरणसतरतुलसीचहसिउबरनशरणअधार२१॥
भजुहरिआदिहि बाटिका भरितारागिव अन्त।
करितापद विश्वासभव सरितातरमितुरन्त २२॥
जड़ मोहन वरणादि कहँ सहचञ्चल चितचेत।
भजुतुलसीसंसारअहि नहिंगहिकरतअचेत २३॥
मरण अधिप वारण वरण दूसर अन्त अगार।
तुलसीइषुसहरागधर तारणतरण अधार २४॥
ज्योंउरविजचाहसि झटिन तौकरिघटितउपाय।
सुमनसवरवरअरिचरण सेवनसरलसुभाय २५॥
द्वितिय पयोधर परम धन वाग अन्त युत सोय।
भजुतुलसी संसारहित यातेअधिकनकोय २६॥
पतिपयोधि पावन पवन तुलसी करहु विचार।
आदिद्वितियअरुअन्तयुतनामततवनिरधार २७
हंस कपट रससहितगुण अन्तआदि प्रथमन्त।
भजतुलसी तजिबामगतिजेहिपदरतभगवन्त२८
कनामसुभिकवरण हरहु अन्तआदि युतनारि।

श्रीकरतमहरवरणवर तुलसीसरत उबार २९ ॥
अङ्कदशारस आदि युत पाण्डुसूनु सह अन्त।
जानिसुवनसेवकसतर करिहैकृपा परन्त ३० ॥
झटिति सखाहिविचारिहिय आदि वरण हरएक।
अन्तप्रथमस्वरदेभजहु जाउरतत्त्वविवेक ३१ ॥
आदि चन्द्र चञ्चलसहित भजुतुलसी तजुकाम।
अघगञ्जनरञ्जनसुजन भवभंजनसुखधाम ३२ ॥
विगति देहतनु जासुपति पदरति सहित सनेम।
यदिअतिमतिचाहसिसुगतितदितुलसीकरुप्रेम ३३॥
करताशुचिसुरसरिसुता शशिसारँगमहि जान।
आदिअन्तसहप्रथमयुततुलसीसमुझुनआन ३४
गिरिजापति कलआदिइक हरिनत्त्रयुधिजान।
आदिअन्तभजुअन्तपुनितुलसीशुचिमनमान ३५
ऋतुपति पदपुनिपादिकयुत प्रथमआदिपुरलेहु।
अन्तहरणपदद्वितियमहँमध्यवरणसहनेहु ३६ ॥
वाहन शेषसुमधुपरव भरत नगर युतजान।

हरिभरिसरितविपर्य्यकरिआदिमध्यअवसान३७
तुलसी उडुगणाको वरण बनजसहितदोउअन्त ।
ताकहँभजुसंशयशमन रहितएककलअन्त ३८ ॥
वारिजवारिजवरणवर वरणत तुलसी दास ।
आदिआदि भजुआदिपद पायेपरमप्रकास ३९ ॥
भजुतुलसीकुलिशान्तकहँ सहअगार तजिकाम ।
सुखसागरनागरललित बलीअलीपरधाम ४० ॥
चंचलसहितरु चंचला अन्त अन्त युतज्ञान ।
सन्तशास्त्रसम्मतसमुझि तुलसीकरुपरमान४१ ॥
आदिवसन्त इकारदै आशय तासु विचार ।
तुलसीतासु शरणपरे कासु न भयो उबार ४२ ॥
धरा धराधर बरण ,युग शरण हरण भवभार ।
करनसतरंतर परमपद तुलसी परमाधार ४३ ॥
बरण धनंजयसूनुपति चरण शरणगति नाहि ।
तुलसीजगवंचक विहठि कियेविधाताताहि ४४ ॥
तुलसी रजनीपूर्णिमा हार सहित लखिलेहु ।

आदिअन्तयुतजानिकहि तुलतरसनलसनेहु४५
भानुगोत्रतिमितासुपति कारणअतिहित जाहि।
ज्ञानसुमतियुतसुखसदनतुलसीमानतताहि४६॥
भजतुलसी ओघादिकहँ सहित तत्वयुतअन्त।
भवआयुर्जयजासुबलमनचलअचलकरन्त४७॥
देत कहानृप काजपर लेत कहा इतराज।
अन्तआदियुतसहितभजुजोचाहसिशुभकाज४८
चन्द्ररवणिभजुगुणसहित समुझिअन्तअनुराग।
तुलसी जोयह बनपरै तौ तव पूरणभाग ४९॥
जिनकेहरिवाहननहीं दधिसुत सुतजेहिनाहिं।
तुलसी तेनरतुच्छहैं बिना समीर उड़ाहिं ५०॥
रविचंचल अरु ब्रह्मद्रव बीच सुबास बिचारि।
तुलसिदास आमनकरे अवनिसुताउरधारि५१॥
बनबनिता दृग कोपमा युतकरु सहित बिवेक।
अन्तआदितुलसीभजहु परिहरिमनकरटेक५२॥
उर्वीअन्तहु आदि युत कुल शोभी कमलादि।

कौविपर्य्ययऐसेहिभजहु तुलसीशमनबिषाद ५३ ॥
तौतोहिकहँ सबकोउसुखद करहि कहातवपांच ।
हरबतृतियबारिजवरण तजवलीनसुनुसांच५४॥
तजहुसदाशुभआशअरि भजुसुमनसअरिकाल ।
सजुमतईशअवन्तिकातुलसीबिमलबिशाल५५॥
एतवंत बरवरणयुग सेत जगत सब जान ।
चेतसहितमुमिरणकरत हरतसकलअघखान५६
मैत्रीवरण यकार को सहसर आदि विचारि ।
पंचवर्ग गहियुतसहित तुलसीताहिसँभारि५७॥
हलयममध्य समानयुत याते अधिक न आन ।
तलसीताहिबिसारिशठभरमतफिरतभुलान५८॥
कौन जाति सीतासती को दुखदायक बाम ।
को कहिये शशिकरदुखद सुखदायककोराम५९ ॥
को शङ्करगुरु बागवर शिव हरको अभिमान ।
करता को अजजगतको भरता को हरिजान ६०॥
सरत्रेयम राजीव गुण करतेहि दृढ़ पहिचान ।

पंचपवर्गहियुतसहित तुलसीताहि समान ६१ ॥
होत हरषका पाय धन बिपति तजे का धाम।
दुखदाकुमतिकुनारितरअतिसुखदायकराम ६२॥
वीरकवन सह मदन शर धीर कवन रतराम।
कवनकूरहरिपद बिमुख कोकामी बशबाम ६३ ॥
कारण को कंजीव को खंगुण कह सब कोय।
जानतको तुलसीकहत सो पुनिआवनहोय६४॥
तुलसी वरण विकल्प को औचप त्रितियसमेत।
अबसमुझेजड़सरितनर समुझैसाधुसचेत ६५॥
जासुआसु सरदेवको अरु आसन हरुवाम।
सकलदुखदतुलसीतजहुमध्यतासुसुखधाम६६॥
चंचलतियभजु प्रथमहरि जोचाहसिपरधाम।
तुलसीकहहिसुजनसुनहु यहीसयानपकाम ६७॥
कुलिशधर्म्मयुगअन्तयुत भजुतुलसी तजुकाम।
अशुभहरनसंशयशमन सकलकलागुणधाम ६८
श्रीकरको रघुनाथहर अनयश कहसबकोय।

सुखदाकोजानतसुमति तुलसीसमतादोय ६९ ॥
वैरमूल हित हरवचन प्रेम मूल उपकार ।
दोहासरल सनेहमें तुलसीकरै विचार ७० ॥
प्राग कवनगुरु लघुजगत तुलसी औरन आन ।
श्रेष्ठाकोहरिभक्तिसम कोलघुलोभ समान ७१ ॥
वरणद्वितिय नाशकनिरय तुलसी अन्तरसार ।
भजहुसकलश्रीकरसदनजनपालकखलसार ७२॥
चपश्रेयस स्वरसहितगुणि यमयुतदुखदनआन ।
तुलसीहलयुतनेकुशल अन्तिकारसहजान ७३ ॥
तुलसी यमगण बोधबिन कहु किमि मिटै कलेश ।
तातेसदगुरु शरणगह जाते पदउपदेश ७४ ॥
भगण जगण कासोंकरसि रामअयननहिं कोय ।
तुलमीपतिपहिचानविनकोउतुलकवहुँलहोय ७५
तुलसी तगण विहीननर सदा नगणके बीच ।
तिनहिं जगणकैसेलहै परेसगणके कीच ७६ ॥
इन्द्ररमणि सुरदेवऋषि रुक्मिणिपति शुभजान ।

भोजनदुहिताकाकअलिआनँदअशुभसमान ७७

कोहितसन्त अहित कुटिल नाशक कोहितलोभ।
पोषकतोषकदुखदअरि शोषकतुलसीक्षोभ ७८॥

सदा नगुणपद प्रीति जेहि जानुनगण समताहि।
जगणताहिजययुतरहततुलसीसंशयनाहि ७९॥

भगणभक्तिकरुभरमतजि तगणसगण विभ्रिहोय।
सगणसुभायसमुभितजो भजेनदूषणकोय ८०॥

श्रीगजआसन जूतजू विहरत तीर सुधीर।
यज्ञपाय मैत्राणपद राजत श्रीरघुवीर ८१॥

बाणद्युतजू तट निकट विहरत रामसुजान।
तुलसीकरकमलनललितलसतशरासनबान ८२॥

मृदुमेचक शिररुहरुचिर शीश तिलक भ्रूबंक।
धनुशरगहिजनुतहितयुततुलसीलसतमयङ्क ८३

हंस कमल विचवरणयुत तुलसी अतिप्रियजाहि।
तीनलोक महँजोभजै लहैतासुफलताहि ८४॥

आदिमहै अन्तहुमहै मध्यरहै तेहि जान।

अनजानेजड़जीवसब समुझैसन्तसुजान ८५ ॥
आदि रहै मध्ये रहै अन्त दहै सोबात ।
रामविमुखके होतहै रामविमुखते जात ८६ ॥
ललितचरणकटिकरखलितलसतललितबनमाल
ललितचिबुकद्विजअधरसहलोचनललितविशाल ८७
भरण हरण अर्पे अमल सहित विकल्पविचार ।
कहतुलसीमतिअनुहरत दोहाअर्थ अपार ८८ ॥
वशिष्ठादि लंकार महँ संकेतादि सुरीति ।
कहेवहुरिआगेकहब समुझबसुमतिविनीति ८९ ॥
कोषअलंकृत संधिगति मैत्री ऊरण विचार ।
हरणभरणसुविसक्तिभल कविहिअर्थनिरधार ९०
देशकाल करता करम बुधि विद्यागति हीन ।
तेसुरतरुतर दारदी सुरसरितीर मलीन ९१ ॥
देशकाल गति हीनजे करता करम न ज्ञान ।
तेपिमर्थमगुपगु करहिं तुलसी श्वानसमान ९२ ॥
अविकारी सवकोसरी भलो जानिवो मन्द ।

सुधासदन वसुवारहो चौथी अथवा चन्द ९३ ॥
नरवर नभसर सलिल विनय वनजविज्ञान ।
सुमतिशुक्तिकाशारदा स्वातीकहहिंसुजान ९४ ॥
शमदम समता दीनता दान दयादिक रीत ।
दोषदुरितहरदरदरउरबरबिबिमल बिनीत ९५ ॥
धरमधुरीण सुधीरधर धास्न वर पर पीर ।
धराधराधरसमअचल बचननविचलसुधीर ९६॥
चौंतिस के प्रस्तार में अर्थ भेद परमान ।
कहहुसुजनतुलसीकहहिं याविधितेपहिचान ९७॥
वेद विषमकवरण सतर सुतर रामकी रीति ।
तुलसीभरतनभरिहरत भूलिहरहुजनिप्रीति ९८॥
वनते गुण कहँ जानिये ताते दृगादिग तीन ।
तुलसीयहजियसमुभिकरिजगजितसत्तप्रवीन ९९
चन्द्र अनल नहिं है कहूँ झूठो बिना विवेक ।
तुलसीतेनरसमुभिहैं जिनहिंज्ञानरसएक १००॥
सतसैया तुलसी सतर तमहर परपर देत ।

तुरितअविद्याजनदुरितवरतुलसमकरिलेत १०१

इति श्रीमद्गोसाईंतुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांसंकेतवक्रोक्तिरामरसवर्णनोनामतृतीयःसर्गः ३ ॥

॥ दोहा ॥

त्रिविधभीतिको शब्दवर विघटनलट परमान ।
कारणअविरलअलपियततुलसीअविभुलान १
दिगभ्रमजाबिधिहोत है कौन भुलावत ताहि ।
जानिपरत गुरुज्ञानते सबजग संशय मांहि २ ॥
कारण चारि बिचारुवर बरणन अपर न आन ।
सदासोउगुण दोषमें लखि न परत बिनज्ञान ३ ॥
इहकरतब सब ताहिको यहिते यह परमान ।
तुलसीमरम न पाइहौ विनुसदगुरु वरदान ४ ॥
दिगभ्रम कारण चारने जानहिं सन्त सुजान ।
ते कैसे लखिपाइहैं जे वहि विषम भुलान ५ ॥
सुखदुख कारण साभयो रसनाको सुत बीर ।
तुलसी सो नवलखिपरे करै कृपा बरधीर ६ ॥

अपने खोदे कूपमहँ गिरे यथा दुख होइ।
तुलसीसुखदसमुझिहियेरचतजगतसबकोय ७॥
ताविधि ते अपनो विभव दुखसुख दे करतार।
तुलसीकोउकोउसन्तवर कीन्हेबिरचि विचार ८॥
रसनाही के सुतउपर करत करन तर प्रीति।
तेहिपाछेजगसबलगे समुझनरीति अरीति ९॥
माया मन जिउ ईशभणि ब्रह्मा विष्णु महेश।
सुरदेवी औ ब्रह्मलों रसना सुत उपदेश १०॥
करणधार वारिधि अगम को गमकरै अपार।
जन तुलसीसतसंग बल पाये विशदविचार ११॥
गहि सुबेल बिरलेसमुझि बहिगये अपरहजार।
कोटिन बूड़े खबरिनहिं तुलसीकहहिंविचार १२॥
श्रवनसुनत देखत नयन तुलतनबिबिधबिरोध।
कहहु रुहीकेहिमानियेकेहिबिधिकरियप्रबोध १३॥
श्रवणात्मक ध्वन्यात्मक बरणात्मक बिधि तीन।
त्रिविधशब्दअनुभवअगमतुलसीकहहिंप्रवीन १४॥

कहतसुनतआदिहि बरण देखत बरण विहीन।
दृष्टिमानचरअचरगण एकहि एकन लीन १५॥
पंचभेदचरगण विपुल तुलसी कहहिं विचारि।
नरपशुस्वेदजखगकृमीबुधजनमतनिरधारि१६॥
अति विरोधतिनमहँप्रचल प्रकटपरत पहिचान।
अस्थावरगतिअपरनहिंतुलसीकहहिंप्रमान१७॥
रोम रोम ब्रह्माण्डबहु देखत तुलसी दास।
बिनदेखेकैसे कोऊ सुनि मानै विश्वास १८॥
वेदकहतजहँ लगिजगत तेहिते अलग न आन।
तेहिअधारव्यवहरतलखुतुलसीपरमप्रमान१९॥
सरषपसूझत जासुकहँ ताहि सुमेरु असूझ।
कहेउनसमुझतसोअबुधतुलसीविगतविसूझ२०
कहतअवर समुझतअवर गहततजतकछुऔर।
कहेउसुनैसमुझतनहीं तुलसीअतिमतिबौर२१॥
देखोकरै अदेख इव अनदेखो विश्वास।
कठिनप्रबलता मोहकी जलकहँपरमपियास२२॥

सोइसेमर सोईसुवा सेवत पाइ बसन्त ।
तुलसीमहिमामोहकी विदितबखानतसन्त २३ ॥
सुन्यो सबनदेख्यो नयन संशयशमन समान ।
तुलसीसमताअसमभव कहतआनकहँआन २४॥
बसहाभवअरिहितअहित सोपिनसमुभतहीन ।
तुलसीदीनमलीनमति मानत परमप्रवीन २५ ॥
भटकत पद अद्वैतता अटकत ज्ञान गुमान ।
सटकतवितरनतेंविहटि फटकततिषुअभिमान२६
जोचाहततेहिबिनुदुखित सुखितरहिततेहिहोइ ।
तुलसीसोअतिशय अगमसुगमरामतेसोइ २७॥
मात पिता निज बालकहि करहिं इष्टउपदेश ।
सुनिमानेविधिआपजेहि निजशिरसहेकलेश २८॥
सबसों भलो मनाइबो भलो होनकी आस ।
करतगगनके गेडुआ सो शठ तुलसीदास २९ ॥
बिलमि सुदेखत देवता करणी समता देव ।
मुयेमार अविचाररत स्वारथ साधक एव ३० ॥

विनहिंबीज तरुएकभव शाखा दल फल फूल।
कोवरणैअतिशयअमित सबबिधिअकलअतूल३१॥
शुकपिकमुनिगणबुधविबुध फलआश्रितअतिदीन।
तुलसीतेसबबिरदहितसोतरुतासुअधीन ३२॥
कोनहिंसेवत आयभव को न सेय पछताय।
तुलसीबादहिपचतहै आपहिआप नशाय ३३॥
कहतबिबिधफल विमलतेहि बहतनएक प्रमान।
भरमप्रतिष्ठामानिमन तुलसी कथत भुलान ३४॥
मृगजलघटभरिबिबिध बिधि सींचतनभतरुमूल।
तुलसीमनहरषितरहत विनहिंलहेफलफूल ३५॥
सोपिकहहिं हमकहँ लह्यो नभतरुको फलफूल।
तेतुलसीतिनतेबिमल सुनेमानहिंमुदमूल ३६॥
तेपितिन्हें यांचहिं विनय करिकरि बार हज़ार।
तुलसी गाडरकी ढरन जानेजगत विचार ३७॥
शशिकर सर्ग रचनाकिये कत शोभा सरसात।
स्वर्गसुमनअवसन्तखलु चाहतअचरजबात ३८॥

तुलसी बोलन बूझई देखत देखन जोय।
तिनशठके उपदेशका करब सयाने कोय ३९॥
जोनसुने तेहिका कहिय कहा सुनाइय ताहि।
तुलसीतेहिउपदेशही तासुसरिस मतिजाहि ४०॥
कहतसकल घट राममय तौ खोजत केहिकाज।
तुलसीकहइहकुमतिसुनि उरआवतअतिलाज४१॥
अलखकहहिं देखन चहहिं ऐसे परम प्रवीन।
तुलसीजगउपदेशही बनिबुधअबुधमलीन ४२॥
हहरत हारत रहितन्दिद रहत धरे अभिमान।
तेतुलसीगुरुआबनहिं कहि इतिहासपुरान ४३॥
निज नैनन दीसत नहीं गही आंधरेबांह।
कहतमोहबशतेहि अधम परमहमारे नाह ४४॥
गगन बाटिका सींचहीं भरिभरि सिन्धुतरंग।
तुलसीमानहिं मोदमन ऐसे अधम अभंग ४५॥
दृषद करत रचना बिहिरि रंग रूप समतूल।
विहगवदन विष्ठाकरे ताते भयो मतूल ४६॥

चाह तिहारो आपते मानन आनन आन।
तुलसीकरुपहिंचानपति यातेअधिकनआन४७॥
आतम बोध विचारइह तुलसी करु उपकार।
कोउकोउ रामप्रसादते पावत परमतपार ४८॥
जहां तोष तहँरामहैं राम तोष नहिं भेद।
तुलसीदेखिगहतनहीं सहतविविधविधिखेद ४९॥
गोधन गजधन बाजिधन और रतनधन खान।
जबआवै सन्तोषधन सब धन धूरिसमान ५०॥
कुथिरति अटत विमूढ़लट घटउदघट तनज्ञान।
तुलसीरटतहटतनहीं अतिशयगतिअभिमान ५१॥
भूभुवंगगत दामभुव कामन विविध विधान।
तोतनवर्त्तमान यत ततनुलसी परमान ५२॥
भोउरसुक्ति बिभवपढ़िक मनगत प्रकट लखात।
मनभोउरअतिसुक्तिते बिलग बिजानब तात५३॥
राम चरण पहिंचानबिनु मिटीन मनकीदौर।
जन्मगँवाये बादही रटत पराये पौर ५४॥

सुनै बरण मानै बरण बरण बिलग नहिंज्ञान ।
तुलसीसुगुरुप्रसादबल परै बरण पहिंचान ५५ ॥
बिटपबेलिगण बागके मालाकार न जान ।
तुलसीताविधिविदबिना करतारामभुलान ५६ ॥
करतबही सो कर्म है कह तुलसी परमान ।
करणहार करतार सो भोगै कर्मनिदान ५७ ॥
तुलसी लटपदते मटक अटक अपितनहिंज्ञान ।
तातेगुरुउपदेशबिनु भरमत फिरतभुलान ५८ ॥
ज्यों बरदा बनिजारके फिरत घनेरे देश ।
खांड़भरे भुसखातहैं बिनगुरुके उपदेश ५९ ॥
बुध्वा वैरन अनयपद श्वपिन पदारथलीन ।
तुलसीतेहिरासभसरिस निजमनगणहिप्रवीन६०
कहत विविधदेखे बिना गहत अनेकन एक ।
तेतुलसीसोनहिं सरिस बाणी बदहिं अनेक ६१ ॥
बिनपाये परतीति अति करत यथारथ हेत ।
तुलसीअबुधअकाशइव भरिभरिमूठी लेत ६२ ॥

बसन बारि बांधत बिहठि तुलसी कौन विचार।
हानिलाभविधिवाधबिनु होतनहीं निरधार ६३ ॥
काम क्रोध मद लोभकी जबलगि मनमें खान।
का पण्डित का मूरख दोनों एक समान ६४ ॥
इतकुलकी करणी तजे उत न भजे भगवान।
तुलसी अधवरके भये ज्यों बघूरको पान ६५ ॥
कीर सरिस बाणी पढ़त चाखन चाहत खांड़।
मन राखत वैरागमहँ घरमें राखत रांड़ ६६ ॥
रामचरण परचै नहीं बिन साधन पद नेह।
मूँड़मुड़ाये बादहीं भांड़भये तजि गेह ६७ ॥
काहभयो बनबन फिरे जो बनिआयो नाहिं।
बनतेबनते बनिगयो तुलसी घरही माहिं ६८ ॥
जो गतिजानै बरणकी तनगति सो अनुमान।
बरणबिन्दुकारणयथा तथाजानु नहिंआन ६९ ॥
बरण योग भवनाम जग जानु भरमको मूल।
तुलसीकरताहै तुही जानु मानु जनिभूल ७० ॥

नाम जगतसम समुझजग बस्तुनकरि चितचैन।
बिंदुगये जिमि गैनते रहत ऐनको ऐन ७१॥
आपुहि ऐनबिचारुबिधि सिद्धिबिमल गतिमान।
आनबासनाबिंदुसम तुलसी परमप्रमान ७२॥
धन धन कहे न होत कोउ समुझिदेखु धनमान।
होतधनिक तुलसीकहत दुखितनर रहतजहान ७३
हिमकी मूरति के हिये लगी नीरकी प्यास।
लगतशब्द गुरुतरनिकर सोभिरही नआस ७४॥
जाके उरबर बासना भई भाष कछु आन।
तुलसीताहि बिडम्बनाकहिबिधिकथहिप्रमान७५
रुजतनभव परचै बिना भेषज करिकिमि कोय।
जानपरे भेपजकरे सहज नाश रुज होय ७६॥
मानस व्याध कुचाह तव सदगुरु बैद समान।
जासुवचनअलबलअबलहोतसकलरुजहान७७
रुचि बाढ़े रुतसंगमहँ नीति छुधा अधिकाय।
होतज्ञानबलपीनअलरुजिनविपतिमिटिजाय७८

शुक्लपक्ष शशिस्वच्छमी कृष्णपक्ष द्युति हीन।
बढ़घघटबविधिभांतिबिचितुलसीकहहिंप्रवीन ७९
सत संगति सितपक्षसम असितअसन्त प्रसंग।
जानुआपकहँचन्द्रसम तुलसी वदन अभंग ८०॥
तीरथपति सतसंग सम भक्ति देवसरि जान।
विधि उलटीगति रामकी तरणिसुताअनुमान ८१
वरमेधा मानहु गिरा धीर धर्म नग्रोध।
मिलन त्रिबेणीमनहरणि तुलसीतजहुविरोध ८२॥
श्रम भवमव मज्जनविशद मलअनीन गइधोय।
अवशमिलनसंशयनहीं सहजरामपदहोय ८३॥
क्षेम विमल बाराणसी सुर अपगासम भक्ति।
ज्ञानविश्वेश्वरअतिविशद लसतदयासहशक्ति ८४॥
बसत क्षेमगृह जासु मन बाराणसी न दूरि।
बिलसतिसुरसरिभक्तिजहँ तुलसी नयकृतभूरि ८५॥
सितकाशी मगहर असित लोभमोह मद काम॥
हानिलाभतुलसीसमुझि बासकरहुवसुयाम ८६॥

गये पलटि आवै नहीं है सो करु पहिचान ।
आजु जेइ सो कालहै तुलसी भरम न मान ८७ ॥
वर्त्तमान आधीन दोउ भावी भूत विचार ।
तुलसीसंशयमननकरु जो है सो निरुआर ८८ ॥
मानसउरवर मम मधुर राम सुयश शुचिनीर ।
उठेउछ्विजिनबुधिविमलभइ बुधिनहिं अगमअधीर८६
अलङ्कार कवि रीतियुत भूषण दूषण रीति ।
पारिजातवरणतविविध तुलसीविमलविनीति ९०
विनय विचार सुहृदता सो पराग रसगन्ध ।
कामादिकतेहिसरबसत तुलसीघाटप्रबन्ध ९१ ॥
प्रेम उमँग कवितावली चली सरित शुचिधार ।
रामबराबरि मिलनहित तुलसीहरषअपार ९२ ॥
तरल तरंग सुछन्दधर हरत द्वैत तरु मूल ।
वैदिकलौकिकविधिविमल लसतबिशदवरकूल ९३॥
सन्तसभा विमलानगरि सिगरिसुमंगलखानि ।
तुलसीउरसुरसरिसुता लसत सुथल अनुमानि ९४॥

मुक्त मुमुक्षू वर बिशद श्रोता त्रिविध प्रकार ।
ग्रामनगरपुरयुगसुतट तुलसीकहहिंविचार ६५ ॥
बाराणसी विराग नहिं शैलसुता मन होय ।
निमिअवधहिसरयुनतजै कहतसुकविसबकोय ६६॥
कहबसुनबसमुझबपुनः सुनिसमुझायबआन ।
श्रमहरघाटप्रबन्धवर तुलसीपरम प्रमान ६७ ॥

इति श्रीमद्गोसाईंस्वामीतुलसीदासविरचितायांसतश तिकायामात्मबोधनिर्देशोनामचतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

यतन अनूपम जानु वर सकल कला गुणग्राम ।
अविनाशीअबयहअमल भौयहतनुधरिराम १ ॥
सदा प्रकाश सरूपवर अस्तन अपर न आन ।
अप्रमेय अद्वैत अज याते दुरत न ज्ञान २ ॥
जानहिं हैसा रसम कहैं तुलसी सन्त न आन ।
जाकी कृपा कटाक्षते पाये पद निर्वान ३ ॥
तजतसलिलअपिपुनिगहत घटतबढ़तनहिंरीति।
तुलसीयहगतिउरनिरखि करियरामपदप्रीति ४॥

चुम्बक इरहनसेतिजिमि संतन हरिसुखधाम।
जानतिरीच्चरसमसफरि तुलसीजानत राम ५॥
भरतहरत दरशतसबहिं पुनि अदरश सबकाहु।
तुलसी सुगुरुप्रसादवर होत परम पद लाहु ६॥
यथा प्रत्यक्ष सरूप बहु जानतहै सब कोय।
तथाहिलैगतिकोलखब असमंजसअतिसोय ७॥
यथा सकल अपिजात अप रविमंडल के माहिं।
मिलत तथा जिवरामपद होत तहां लै नाहिं ८॥
कर्मकोष सँग लैगयो तुलसी अपनी बानि।
जहांजाय बिलसै तहां परै कहां पहिचानि ९॥
ज्यों धरणीमहँ हेतु सब रहत यथा धरि देह।
त्योंतुलसीलैराममहँ मिलतकबहुँनहिंएह १०॥
शोषक पोषक समुभ्कशुचि राम प्रकाश सरूप।
यथातथाबिनुदेखिये जिमिआदरशअनूप ११॥
कर्म मिटाये मिटत नहिं तुलसी किये बिचार।
करतबही के फेरहै याविधि सार असार १२॥

एक किये हो दूसरो बहुरि तीसरो अंग ।
तुलसी कैसेहु नामरो अतिशय कर्मतरंग १३ ॥
इन दोउनते रहतभो कोउ न राम तजि आन ।
तुलसीयहगतिजानिहैंकोउकोउसन्तसुजान १४॥
सन्तनकोलै अमिसदन समुझहि सुगतिप्रवीन ।
कर्मविपर्यय कबहुँनहिं सदा रामरसलीन १५ ॥
सदाएकरस सन्तसिय निश्चय निशिकरजान ।
रामदिवाकरदुखहरण तुलसीशीलनिधान १६ ॥
सन्तनकीगति उरविजा जानहु शशि परमान ।
रमितरहतरसमेंसदा तुलसीरतिनहिंआन १७ ॥
जातरूपजिमिअनलमिलि ललितहोततनताय ।
सन्तशीलकरसीयतिमि लसहि रामपदपाय १८॥
आपुहिं बांधत आपु हठि कौन छुड़ावत नाहि ।
सुखदायकदेखतसुनत तदपिसोमाननमाहि १९ ॥
जौन तारते अधमगति ऊर्ध्वतौन गति जात ।
तुलसीमकरीतन्तुइव कर्म म कबहुँ नशात २० ॥

जहां रहत तहँ सह सदा तुलसी तेरी बानि ।
सुधरैविधिवशहोयजब सतसंगतिपहिचानि२१॥
रवि रजनी सघरा तथा इह अस्थिर अस्थूल ।
सूक्ष्मगुणको जीवकर तुलसी सो तनमूल २२ ॥
आवत अप रवि ते यथा जात तथा रविमाँहि ।
जहांते प्रकटतहीदुरत तुलसी जाननताहि २३॥
प्रकटभये देखत सकल दुरतलखत कोइकोय ।
तुलसीयहअतिशयअगम बिनगुरुसुगमनहोय २४॥
याजगजेनयहीननर बरबस दुख मग जाहि ।
प्रकटतदुरतमहादुखी कहँलगिकहियतताहि २५॥
सुखदुखमग अपने गहे मगकेहु गहत न धाय ।
तुलसीरामप्रसादबिनु सोकिमिजानो जाय २६॥
महितेरवि रविते अवनि सपनेहुँ दुखकहुँनाहि ।
तुलसीतबलगिदुखितअतिशशिमगुलहतनताहि २७
सन्तन की गति शीतकर लेश कलेश न होय ।
सोसियपदसुखदासदा जानुपरमपद सोय २८॥

तजतअमियशशिजानिजग तुलसीदेखतरूप।
गहतनहींसबकहँविदित अतिशयअमलअनूप २९॥
शशिकरसुखद सकल जगतको तेहि जानतनाहि।
कोककमलकरदुखदकरतदपि दुखदनहिंताहि ३०
बिन देखे समुझे सुने सोउ भौ मिथ्यावाद।
तुलसीगुरुगमकैलखै सहजहिमिटैविषाद ३१॥
बरषि बिश्वहरषितकरत हरतताप अघप्यास।
तुलसी दोष नजलदकर त्यों जड़करतजवास ३२
चन्द्र देत अमिलेतविष देखहु मनहिंविचार।
तुलसी तिमिसियसन्तवर महिमाबिशदअपार ३३
रसम विदित रविरूपलखु शीत शीतकर जान।
लसत योगयशकारभव तुलसीसम भसमान ३४॥
लेति अवनिरवि अंशकहँ देति अमिय अपसार।
तुलसी सूक्षमको सदारविरजनीशअधार ३५॥
भूमि भानु अस्थूल अप सकल चराचर रूप।
तुलसी बिनगुरुनालहै यहमतअमलअनूप ३६

तुलसी जे लयलीननर ते निशि करत न लीन ।
अपर सकल रविगतभये महाकष्टअतिदीन ३७ ॥
तुलसी कवनेहुँ योगते सतसंगति जब होय ।
राममिलनसंशय नहीं कहहिंसुमतिसबकोय ३८
सेवक पद सुखकर सदा दुखद सव्यपद जान ।
यथा विभीषणरावणहि तुलसीसमुझप्रमान ३९ ॥
शीत उष्ण कर रूप युग निशिदिनकर करतार ।
तुलसी तिनकहँ एकनहिं निरखहुकरिनिरधार ४०
नहिं नैनन काहू लख्यो धरत नाम सबकोय ।
ताते सांचो है समुझ झूँठकबहुँनहिंहोय ४१ ॥
वेदकहत सबको विदित तुलसी अमियस्वभाव ।
करतपानअपिरुजहरतअविरलअमलप्रभाव४२
गन्ध शीतअपि उष्णता सबहिंविदित जगजान ।
महिबनअनलसुआनिलगबिनदेखेपरमान ४३॥
इनमहँ चेतन अमलअल बिलखत तुलसीदास ।
सोपदगुरुउपदेश सुनि सहज होतपरकास ४४॥

यहि विधिते वर बोध इह गुरुप्रसाद कोउ पाव।
हैतेअजातिहुँकालमहँ तुलसीसहजप्रभाव ४५॥
काकसुता सुत वा सुता मिलत जननि पितु आय।
आदिमध्यअवसानगत चेतनसहजसुभाय ४६॥
ममतास्वारथहीन ते होत सुविशद विवेक।
तुलसीयहतिनहीं फबै जिनहिंअनेकनएक ४७॥
सब स्वारथ स्वारथ रटत तुलसी घटत न एक।
ज्ञानरहितअज्ञानरत कठिनकुमनकरटेक ४८॥
स्वारथ सोजानहु सदा जासों बिपति नशाय।
तुलसीगुरु उपदेशबिन सो किमि जानो जाय ४९॥
कारज स्वारथ हित करै कारण करै न होय।
मनवाऊषविशेष ते तुलसी समभहु सोय ५०॥
कारण कारज जानता सबकाहू परमान।
तुलसी कारजकार जो सो तें अपर न आन ५१॥
बिन करता कारज नहीं जानत हैं सबकोय।
गुरुमुखश्रवणसुनतनहिंप्राप्तिकवनविधिहोय ५२

करता कारण कारजहु तुलसी गुरु परमान ।
लोपतकरता मोहवश ऐसो अबुधमलान ५३ ॥
अनिलसलिल विधियोगते यथावीचि बहुहोय ।
करतकरावतनहिं कछुक करता कारणसोय ५४ ॥
क्षेम धरण करतार कर तुलसी पति परधाम ।
सोकरतरतासमनकोउ सब बिधिपूरणकाम ५५ ॥
करता कारण सारपद आवै अमल अभेद ।
कर्म्मघटतअपि बढ़तहैं तुलसीजानत वेद ५६॥
स्वेदज जवन प्रकारते आपु करै कोउ नाहिं ।
भयेप्रकट तेहिके सुनौ कौन बिलोकतताहि ५७॥
भयो विषमता कर्ममहँ समता किये न होय ।
तुलसीसमतासमुझकर सकलमानमदधोय ५८॥
समहितसहित समस्तजग सुहृदजानसबकाहु ।
तुलसीयहमतधारुउरदिनप्रतिअतिसुखलाहु ५९
यह मनमहँ निश्चयधरहु है कोउ अपर न आन ।
कासनकरतबिरोधहठि तुलसीसमुझप्रमान६०॥

महिजलअनलसुअनिलनभ तहांप्रकटतवरूप।
जानिजायबरबोधते अतिशुभअमलअनूप६१॥
जोपै आकसमात ते उपजे बुद्धि बिशाल।
नातो अतिछलहीन ह्वै गुरुसेवनकछुकाल ६२॥
कारजयुग जानहु हिये नित्य अनित्य समान।
गुरुगमते देखहिं सुजन कहतुलसीपरमान६३॥
महि मयंकअहिनाथको आदि ज्ञान भौ भेद।
ता बिधि तेई जीव कहँ होतसमुभविनखेद ६४॥
परो फेर निज कर्म महँ भ्रम भव का यह हेत।
तुलसीकहतसुजनसुनहु चेतनसमुभअचेत६५॥
नाम कार दूषण नहीं तुलसी किये बिचार।
कर्मनकी घटना समुभि ऐसे बरण उचार ६६॥
सुजन कुजन महिगत यथा तथा भानुशशिमाहिं।
तुलसीजानतहो सुखी होत समुभ बिन नाहिं६७
मातुतातभवरीति जिमि तिमितुलसी गतितोरि।
मातनतातन जानु नव है तेहिसमुभवहोरि ६८॥

सर्व सकल तें हैं सदा विश्लेषित सब ठौर ।
तुलसीजानहिंसुहृदजे तेअतिमतिशिरमौर ६९ ॥
अलंकार घटना कनक रूप नाम गुण तीन ।
तुलसी रामप्रसाद ते परखहिं परमप्रवीन ७० ॥
एक पदारथ विविध गुण संज्ञा अगम अपार ।
तुलसी सुगुरुप्रसाद ते पाये पद निरधार ७१ ॥
गन्धनमूल उपाधि बहु भूषण तनगण जान ।
शोभागुणतुलसीकहहिंसमुझहिंसुमतिनिधान७२
जैसो जहां उपाधि तहँ घटित पदारथ रूप ।
तैसोतहांप्रभासमन गुणगणसुमति अनूप ७३ ॥
जानु वस्तु अस्थिर सदा मिटत मिटाये नाहि ।
रूपनाम प्रकटत दुरत समुझिविलोकहुनाहि ७४॥
पेषरूप संज्ञा कहब गुण सुविवेक विचार ।
इतनोई उपदेशवर तुलसी किये विचार ७५ ॥
सदा सगुण सीतारमण सुखसागर बलधाम ।
जन तुलसी परखे परम पाये पदविश्राम ७६ ॥

सगुण पदारथ एकनित निर्गुण अमित उपाधि।
तुलसीकहहिंविशेषतेसमुझसुगतिसुठिसाधि ७७
यथा एकमहँ वेदगुण तामहँ को कहु नाहि।
तुलसीवर्नतसकलहैं समुझतेंकोउँकोउताहि ७८
तुलसी जानत साधुजन उदय अस्त गत भेद।
बिनजाने कैसे मिटै विविधजनन जन खेद ७९॥
संशय शोक समूल रुज देत अमित दुख ताहि।
अहिअनुगत सपने विविधचाहिपरायणजाहि ८०
तुलसी सांचो शापहै जबलगि खुलैं न नैन।
तोतबलगि जबलगि नहीं सुनैंसुगुरुबरबैन ८१॥
पूरण परमारथ दरश परसत जोलगि आश।
तोलगि रवनउत्थाननद जबलगिजलनप्रकाश ८२
तबलगि हमते सब बड़ो जबलगि है कछुचाह।
चाहरहितकहकोअधिक पायपरमपदथाह ८३॥
कारणकरताहै अचल अपि अनादि अजरूप।
ताते कारजविपलतर तुलसी अमलअनप ८४॥

करता . जानि न परतहै बिनगुरुवर परसाद।
तुलसीनिजसुखविधिरहितकेहिबिधिमिटैविषाद ८५
मृण्मयघट जानत जगत बिनकुलालनहिंहोय।
तिमितुलसी करतारहित कर्मकरै कहुँ कोय ८६॥
ताते करता ज्ञानकर जाते कर्म प्रधान।
तुलसीनालखिपाइहौ कियेअमितअनुमान ८७॥
अनूमान साक्षी रहित होत नहीं परमान।
कह तुलसी प्रत्यक्षजो सोकहुअपरकोआन ८८॥
मिति कारण करता सहित कारज किये अनेक।
जोकरता जानै नहीं तो कहु कवन विवेक ८९॥
स्वर्णकार करता कनक कारण प्रकट लखाय।
अलंकारकारजसुखद गुणशोभासरसाय ९०॥
चामीकर भूषण अमित करता कह तब भेद।
तुलसीजेगुरुगमरहित नाहिरमितअतिखेद ९१॥
तन निमित्त जहँ जो भयो तहां सोइ परमान।
जिनजानै मानै तहां तुलसी कहहिं सुजान ९२॥

मृणमयभाजन विविधविधि करतामन भवरूप।
तुलसी जानेते सुखद गुरु गम ज्ञान अनूप ९३॥
सबदेखत मृणभाजनहिं कोइ कोइ लखत कुलाल।
जाकेमनके रूपवह भाजनबिलखु विशाल ९४॥
एकै रूप कुलालको माटी एक अनूप।
भाजनअमित विशाललघु सोकरतामनरूप ९५॥
जहांरहत बरतत तहां तुलसी नित्यस्वरूप।
भूतन भावीताहिकहँ अतिशय अमलअनूप ९६॥
श्वास समीरप्रत्यच्च अप स्वच्छा दरशलखात।
तुलसी रामप्रसादबिन अविगतिजानिनजात ९७
तुलसी तलरहिजातहै युगतन अचलउपाधि।
यहगतितेहिलखिपरतजेहिभईसुमतिसुठिसाधि ९८
करता कारण कालके योग करम मतजान।
पुनःकालकरता दुरत कारण रहतप्रमान ९९॥

इति श्रीमद्गोसाईंस्वामीतुलसीदासविरचितायांसत
शतिकायांकर्म्मसिद्धान्तयोगोनामपंचमःसर्गः॥५॥

॥ दोहा ॥

जलथलतन गतहैसदा तेतुलसी तिहुँकाल ।
जन्ममरणसमुझेविना भाषतसमन विशाल १ ॥
तैंतुलसी करता सदा कारण शब्द न आन ।
कारणसंज्ञासुखदुखद विनगुरुतेहिकिमिजान २ ॥
कारजरतकरता समुझ दुखसुख भोगतसोय ।
तुलसी श्रीगुरुदेवबिन दुखप्रददूर नहोय ३ ॥
कारण शब्द स्वरूप में संज्ञागुण भवजान ।
करतासुरगुरुते सुखद तुलसीअपर नआन ४ ॥
गन्ध विभावरि नीररस सलिल अनल गतज्ञान ।
वायुवेगकहँ बिनलखे बुधजनकहहिं प्रमान ५ ॥
अनुस्वार अक्षर रहित जानत हैं सब कोय ।
कहतुलसीजहँलगिबरण तासुरहितनहिंहोय ६ ॥
आदिहु अन्तहु हैसोई तुलसी और न आन ।
बिनदेखे समुझेविना किमिकोइ करै प्रमान ७ ॥
रहितविन्दु सब बरणते रेफसहित सब जान ।

तुलसी स्वर संयोगले होत बरण पदमान ८॥
अनुस्वार सूक्षम यथा तथा बरण अस्थूल।
जोसुक्षम अस्थूलसो तुलसी कबहुँ न भूल ९॥
अनिलअनलपुनिसलिलरजतनगततनवतहोय।
बहुरिसोरजगतजलअनलमरुतसहितरविसोय१०
औरभेद सिद्धान्तयह निरखुसुमति करसोय।
तुलसीसुतभवयोगबिन पितुसंज्ञानहिंहोय ११॥
संज्ञाकहतव गुण समुझ सुनव शब्द परमान।
देखबरूप विशेष हैं तुलसी बेष बखान १२॥
होत पिता ते पुत्र जिमि जानतकोकहु नाहि।
जबलगिसुनपरसोनहीं पितुपदलहैनताहि १३॥
तिमि बरणन संज्ञा करे बरण बरण संयोग।
तुलसीहोयनबरणकर जबलगिबरणवियोग१४॥
तुलसी देखहुसफलकहँ यहिविधिसुतआधीन।
पितुपदपरखिसुहढ़भयो कोउकोउपरमप्रबीन १५
जहँदेखो सुतपद सकल भयो पितापद लोप।

तुलसीसोजानै सुई जासु अमोलिक चोप १६॥
ख्यातसुवनतिहुँलोक महँ महाप्रबलअतिसोइ।
जो कोइतेहि पाछे करै सोपर आगे होइ १७॥
तुलसीहोत नहीं कछुक रहित सुवन व्यवहार।
तोहींते अग्रजभयो सब विधि तेहि परचार १८॥
सुवनदेखिभूले सकल भय अति परमअधीन।
तुलसीजेहि समुझाइये सोमनकरतमलीन १९॥
मानतसो सांचो हिये सुनत सुनावत बादि।
तुलसीतेसमुझतनहींजोपदअमलअनादि २०॥
जाहि कहतहैं सकलसो जेहि कहतव सो ऐन।
तुलसीताहिसमुझिहिये अजहुंकछुचितचैन २१
तुलसी जोहै सो नहीं कहत आन सब कोय।
यहिविधि परमविडम्बना कहहुनकाकहँहोय २२॥
गुरुकरिबो सिद्धान्त यह होय यथारथ बोध।
अनुचितउचितलखायउरतुलसीमिटैविरोध २३॥
सतसंगति को फलयही संशय लहै न लेश।

हैअस्थिरशुचिसरलचित पावैपुनिनकलेश २४॥
जोमरबोपद सबनको यह लगि साध असाध।
कवनहेतु उपदेशगुरु सत संगति भवबाध २५॥
जो भावी कछु है नहीं झूठो गुरु सत संग।
ऐसिकुमतिते झूठगुरु सन्तन को परसंग २६॥
जौले लखि नाहीं परत तुलसी पर पद आप।
तौलगिसीहि विवशासकल कहतपुत्रको बाप २७॥
जहँलागि संज्ञा बरण भौ जासु कहे ते होय।
तो तुलसी से है सबल आन कहाकहु होय २८॥
अपने नैनन देखिजे चलहिं सुमति वरलोग।
तिनहिंनबिपतिबिषादरुजतुलसीसुमतिसुयोग २९॥
मृगागगन चरज्ञान विन करत नहीं पहिचान।
परवशशठहठतजंतमुखतुलसीफिरतभुलान ३०॥
कान्हकहो तेहितोहिं के जेहि उपदेशउ तात।
तुलसीकहतसोदुखसहतसमुझरहितहितबात ३१
बिनकाटे तरुवर यथा मिटै कवन विधि छांह।

त्यौंतुलसीउपदेशबिन निःसंशय कोउनांह ३२॥
अपनोकरतबआप लखि सुनिगुनिआप विचार।
तौतोहिंकहँदुखदाकहा सुखदासुमतिअधार ३३॥
ब्राह्मणवर विद्या विनय सुरति विवेक निधान।
पथरतिअनथअतीतमतिसहितदयाश्रुतिमान ३४
विनयछत्र शिर जासु के प्रतिपदपर उपकार।
तुलसीसोछत्री सही रहित सकलव्यभिचार ३५
वैश विनयमग पगधरै हरै कटुक वर बैन।
सदयसदाशुचिसरलता होय अचलसुखऐन ३६
शूद्र क्षुद्र पथरिहरै हृदय विप्र पदमान।
तुलसीमनसमतासुमतिसकलजीवसमजान ३७॥
हेतुचरण वरशुचि रहनि रसनिरास सुखसार।
चाहन काम सुरानरस तुलसीसुदृढ़ विचार ३८॥
यथालाभ सन्तोषरत गृह मग वन सगरीत।
सो तुलसीसुखमेंसदा जिनतनुविभवविनीत ३९
रहै जहां बिचरैं तहां कमी कहूँ कछु नाहिं।

तुलसीतहँ आनन्दसँग जातयथा सँगआहिं४०॥
कलकर्म जेहि को सदा सो मन दुखदातार।
तुलसीजोसमुझेमनहिं तोतेहिं तजैविचार ४१॥
कहतसुनत समुझतलखत तेहितेविपतिनजाय।
तुलसीसबते विलग हैं जब ते नहिं ठहराय४२॥
सुनतकोटि कोटिन कहत कौड़ी हाथ न एक।
देखत सकलपुराणश्रुतितापर रहितविवेक ४३॥
समुझत है सन्तोष धन याते अधिक न आन।
गहतनहीं तुलसीकहत ताते अबुध मलान४४॥
कहा होत देखे कहे सुनि समुझे सब रीति।
तुलसीजबलगिहोतनहिं सुखदरामपदप्रीति४५॥
कोटिन साधनके किये अन्तर मल नहिं जाय।
तुलसीजौलगिसकलगुणसाहितनकर्मनशाय ४६
चाहबनी जबलगि सकल तबलगि साधनसार।
तामहँअमित कलेशाकर तुलसीदेखविचार ४७॥
चाहकिये दुखिया सकल ब्रह्मादिक सबकोय।

निश्चलता तुलसीकठिन रामकृपा बशहोय४८॥
अपनोकर्म न आपकहँ भलो मन्द जेहि काल।
तबजानब तुलसीभई अतिशय बुद्धिविशाल४९
तुलसी अबलगि लखिपरत देह प्राणको भेद।
तब लगि कैसे कैमिटै करम जनित बहुखेद ५०॥
जोइ देह सोइ प्राणहै प्राण देह नहिं दोय।
तुलसी जोलखिपायहै सोनिरदय नहिंहोय ५१॥
तुलसी ते झूठो भयो करि झूठे सँग प्रीति।
हैसांचो होसांच जब गहे राम की रीति ५२॥
झूठी रचना सांच है रचत नहीं अलसात।
बरजतहू झगरत बिहठि नेकन बूझतबात ५३॥
करमखरी कर मोह थल अंक चराचर जाल।
हरतभरत भरहरगनत जगत जोतसीकाल ५४॥
कहन कालकिलसकल बुध ताकरयह व्यवहार।
उतपतिथितिलयहोतहै सकलतासुअनुहार ५५॥
अंकुर किशलय दल विपुल शाखायुतवरमूल।

फूलिफरलऋतुअनुहरततुलसीसकलसतूल५६॥
कहतब करतब सकलतेहि ताहि रहतनहिंआन।
जाननमाननआनविधिअनूमानअभिमान५७॥
हानिलाभ जयविधि विजय ज्ञानदान सनमान।
खानपानशुचिरुचिअशुचितुलसीविदितविधान५८
शालकपालकसम विषम रमभमगमगति ज्ञान।
अटघटलटनटनादिजट तुलसीरहितनजान५९॥
कठिन करम करणी कथन करता कारक काम।
कायकष्ट कारणकरम होतकाल समशाम ६०॥
खबर आतमा बोधवर खरविन कबहुँ नहोय।
तुलसी खसमविहीनजे तेखरतरनहिं सोय ६१॥
चितरतिवितव्यवहारेतविधिअगमसुगमजपनीच।
धीस्वरमधारणहरेण तुलसी परतनबीच ६२॥
शब्दरूप विवरन विशद तासुयोगभव नाम।
करतानृपबहुजातितेहि संज्ञासबगुणधाम ६३॥
नामजाति गुण देखिके भयो प्रबल उरमर्म।

तुलसी गुरुउपदेश बिन जानिसकै कोकर्म ६४ ॥
अपनकर्म वरमानिकै आपबँधो सब कोय।
कारजरतकरताभयो आपनसमुझतसोय ६५ ॥
कोकरता कारणलखै कारज अगम प्रभाव।
जोजहँ सोतहँ तरहरष तुलसी सहजसुभाव ६६॥
तुलसी बिनगुरुको लखै वर्त्तमान विधिरीत।
कहुकेहिकारणतेभयो सूर उष्णशशिशीत ६७ ॥
करता कारणकर्मते परपर आतम ज्ञान।
होतनबिनउपदेश गुरु जोषट्वेदपुरान ६८ ॥
प्रथम ज्ञान समुझैनहीं विधिनिषेध व्यवहार।
उचितानुचितहिहेरिधरि करतबकरियसँभार६९॥
जबमन महँ ठहरायविधि श्रीगुरुवर परसाद।
इहिविधि परमातमलखै तुलसी मिटैविषाद ७० ॥
बरबस करत विरोधहठि होनचहत अकहीन।
गहिमतिबकबृकस्वानइवतुलसी परम प्रवीन ७१
आककर्म भेषजविदित लखतनहीं मतिहीन।

तुलसीशठअकवशविहठिदिनदिनदीनमलीन७२
करताहीते कर्मयुग सोगुण दोष सरूप।
करतभोग करतबयथा होयरंककिनभूप ७३॥
वेदपुराणरुशास्त्रयुत निज बुधि बल अनुमान।
निजनिजकरिकरिहैबहुरिकहुतुलसीपरमान ७४॥
विविध प्रकार कथनकरै जाहियथाभव मान।
तुलसी सुगुरुप्रसादबल कोउकोउकहतप्रमान ७५
उरडरअतिलघु होनकी भवलघुसुरतिभुलान।
स्वर्गलाहलखिपरतनहिं लखतलोहकोहान ७६॥
नैनदोष निजकहतनहिं विविध बनावत बात।
सहतजानितुलसीविपतितदपिननेकलजात ७७॥
करत चातुरी मोहवश लखतननिजहितहान।
शुकमरकटइवगहतहठतुलसी परमसुजान ७८॥
दुखिया सकल प्रकारशठ समुझिपरतहीनाहिं।
लखतनकपटकमीनजिमि अशनभषतभ्रमनाहिं ७९॥
तुलसी निजमन कामना चहतशून्य कहँसेय।

वचनगायसबके विविध कहहुपयसकहिदेय ८०॥
बातहि बातहि बनिपरे बातहि बात नशाय ।
बातहि आदिहिदीपभव बातहिअन्तबताय ८१ ॥
बातहिते बनिआवई बातहिते बनि जात ।
बातहिते बरबगमिलत बातहिते बौरात ८२ ॥
बातविना अतिशय विकल बातहिते हरषात ।
बनतबात बरबातते करतबात बरघात ८३ ॥
तुलसी जाने बातबिन बिगरत हरइक बात ।
अनजानेदुखबातके जानिपरत कुशलात ८४ ॥
प्रेमबैर औपुण्य अघ यशअपयश जयहान ।
बातबीजइनसबनको तुलसी कहहिंसुजान ८५ ॥
सदाभजन गुरुसाधु द्विज जीवदया समजान ।
सुखद सनेरत सत्यव्रत स्वर्ग सप्तसोपान ८६ ॥
वंचक विधिरतनरतनय विधिहिंसाअतिलीन ।
तुलसी जगमहँ विदितवर नरकनिशेनीतीन ८७॥
जनर जगगुण दोपयुत तुलसी बदत विचार ।

कबहुँसुखीकबहूंदुखितउदयअस्तव्यवहार ८८ ॥
कारज जगके युगुलतम काल अचलबलवान ।
त्रिविधविकलतेतेहटहिंतुलसीकहहिंप्रमान ८९ ॥
अनुभव अमल अनूपगुरु कछुकशास्त्र गतिहोय ।
बचैकालक्रमदोषते कहहिं सुबुधसबकोय ९० ॥
सबविधि पूरणधामवर रामअपर नहिं आन ।
ताकी कृपा कटाक्षते होतहिये दृढ़ज्ञान ९१ ॥
सोस्वामी सोतर सखा सोवर सुखदा तार ।
तातमातआपदहरण सोआममयअधार ९२ ॥
सुखद दुखद कारज कठिन जानतको तेहिनाहिं ।
जानेहुपरबिन गुरुकृपा करतबबनतनकाहिं ९३ ॥
तुलसी सकल प्रधानहै वेदविदित सुखधाम ।
नामहैसमुझबकठिनअतियुगलभेदगुणनाम ९४
नाम कहत सुखहोतहै नामकहत दुखजाल ॥
नामकहतसुख जातदुरिनामकहतदुखखान ९५॥
नामकहत वैकुण्ठ सुख नामकहत अघखान ।

तुलसी तोतेउरससमुझि करहु नामपहिंचान ९६ ॥
चारों चौदह अष्टदश रससमुझब भरिपूर ।
नामभेदसमुझेविना सकल समुझमहँधूर ९७ ॥
बारदिवसनिशिमाससित असित बरषपरमान ।
उत्तरदक्षिणआशरवि भेदसकलमहँजान ९८ ॥
कर्मसुभाशुभ मित्रअरि रोदन हँसन बखान ।
औरभेदअतिअमितहैंकहँलगि कहियप्रमान ९९
जहँलगि जनदेखब सुनब समुझबकहबसुरीत ।
भेदरहितकछुहैनहीं तुलसीवदहिं विनीत १०० ॥
भेदयाहिविधि नाममहँ विनगुरु जाननकोय ।
तुलसीकहहिंविनीतवरज्योंविरंचिशिवहोय १०१।

इति श्रीमद्गोसाईंस्वामीतुलसीदासविरचितायांसम
शतिकायांज्ञानसिद्धान्तयोगोनामषष्ठःसर्गः ६ ॥

॥ दोहा ॥

तिनहिंपढ़े तिनहींसुने तिनहिं सुमति परगास ।
जिन आशा पाछे करे गहे अलम्बनीसास १ ॥

तबलगियोगी जगतगुरु जबलगि रहै निरास ।
जबआशामन में जगी जगगुरुयोगी दास २ ॥
हितपुनीतस्वारथसबहिअहितअशुचिबिनचाउ ।
निजमुख माणिकसमदशन भूमिपरत भौहाउ ३ ॥
निजगुणघटतननागनग हर्षि न पहिरत कोल ।
गुञ्जाप्रभु भूषण करै तानेवढ़े न मोल ४ ॥
देइ सुमन करिवासातिल परिहरिखरिरसलेत ।
स्वारथ हितभूतलभरे मनमें चकतन सेत ५ ॥
अँसुवन पथिक निराशते नरभुइसजलसरूप ।
तुलसी किनबंचे नहीं इनसब थलकेकूप ६ ॥
तुलसी मित्र महासुखद सबहिमित्रकी चाउ ।
निकटभये विलोपत सुखर एकळपाकर आउ ७ ॥
मित्रकोपवैरतरसुखद अनहित मृदुलकराल ।
द्रुमदलशिशिरसुखानरम्बरहनिदाघअनिलाल ८
खलनेरे गुण मानहिं मेटहि दाता चोप ।
जिमिजलतुलसीदेनगहिजलदकरततोहिलोप ९ ॥

वरषत हरषत लोगसब करषत लखतनकोय ।
तुलसी भूपति भानुसम प्रजाभागवशहोय १० ॥
मालीभानु कृशानु सम नीति निपुणमहिपाल ।
प्रजाभागवशहोहिंगेकबहिंकबहिं कलिकाल ११ ॥
समयपरे सुपुरुषनरन लघुकरिगनियन कोय ।
नायकपीपर बीजसम बचैतोतरुवरहोय १२ ॥
बड़े रामरत जगतमें कैपरहित चितजाहि ।
प्रेमपैंजनिबहीजिन्हें बड़ो सोसबहीचाहि १३ ॥
तुलसी सन्तनते सुनै सन्तत इहै विचार ।
तनधनचञ्चलअबलजगजुगजुगपरउपकार १४
ऊँचहि आपद बिभववर नीचहि दत्तनहोय ।
हानिवृद्धिद्विजराजकहँ नहिंतारदगणकोय १५ ॥
बड़ेरतहिं लघुके गुणहिं तुलसी लघुहिन हेत ।
गुञ्जाते मुक्ता अरुण गुञ्जा होतन श्वेत १६ ॥
होहिं बड़ेलघु समयसह तोलघुसकहिंनकाढ़ि ।
चन्द्र दूबरो कूबरो तऊ नखतते बाढ़ि १७ ॥

उरग तुरग नारी नृपति नर नीचो हथियार।
तुलसीपरखतरहबनित इनहिंनपलटतबार १८॥
दुरजन आप समान करि को राखै हित लागि।
तपततोयसहजाहिपुनिपलटिबतावतआगि १९॥
मन्त्र तन्त्र तन्त्री त्रिया पुरुष अश्वधन पाठ।
पुनि गुणयोग वियोगते तुरत जाहिं ये आठ २०॥
नीच निचाई नहिं तजै जो पावै सतसंग।
तुलसीचन्दनबिटपबसिबिनविषभयनभुजंग २१॥
दुरजन दरपण सम सदा करि देखो हिय दौर।
मनमुखकी गतिऔरहै बिमुखभयेकछुऔर २२॥
मित्रक अवगुण मित्रको पर महँ भापत नाहिं।
कूपछांह जिमि आपनी राखत आपहिमाहिं २३॥
तुलसीसो समरथ सुमति सुकृती साधु सुजान।
जोविचारिव्यवहरतजगखरचलाभअनुमान २४॥
सीख सखासेवक सचिव सुतिय सिखावनसांच।
सुनि करियेपुनिपरिहरिय परमनरंजनपांच २५॥

पुष्टिहिनिजरुचि काजकरि रुष्टहिकाज बिगारि।
तिया तनय सेवकसखा मनकेकण्टक चारि २६॥
नारिनगर भोजनसचिव सेवक सखा अगार।
सरसपरिहरे रंगरस निरस विषाद विकार २७॥
दीरघरोगी दारिदी कटुबच लोलुप लोग।
तुलसी प्राणसमानज्यों तुरितत्यागिबेयोग २८॥
धाय लगे लोहा ललकि खेंचिउ लेइय नीच।
समरथ पापी सों बयर तीन बेसाही मीच २९॥
तुलसी स्वारथ सामुह परमारथ तन पीठि।
अन्धकहे दुख पावकहि डिठियारेहियडीठि ३०॥
अनसमझेनं शोचवर अवशि समुझिय आप।
तुलसीआपनसमुझिबिनपलपलपरपरिताप ३१।
कूप खनहिं मन्दिर जरत लावहिं धारि बबूर।
बायलुनचहसमयबिन कुमतिशिरोमणिकूर ३२॥
निडरअनयकरि अनकुशल बीसबाहु समहोय।
गयोगयोकहसुमनिजनभयोकुमतिकहकोय ३३॥

बहुसुत बहुरुचि बहुवचन बहुअचार व्यवहार ।
इनको भलो मनाइबो इह अज्ञान अपार ३४ ॥
अपयश योग कि जानकी मणिचोरी की कान्ह ।
तुलसीलोगरिझाइबो करसिकातिबोनान्ह ३५ ॥
मांगि मधकरी खात जे सोवत पावँ पसारि ।
पाप प्रतिष्ठा बढ़ि परी तुलसी बाढ़ी रारि ३६ ॥
लही आंखि कब आंधरहिं बांझ पूत कब जाय ।
कब कोढ़ी काया लही जग बहराइच जाय ३७॥
या जगकी विपरीतगति काहि कहो समुझाय ।
जलजालिगोंझखबाधिगोंजनतुलसीमुसुकाइ ३८
कै जूझिबो कि बूझिबो दान कि काय कलेश ।
चारिचारु परलोक पथ यथायोग उपदेश ३९ ॥
बुध कि मानसर वेद बन मन खेत भव सींच ।
तुलसीकृषिगति जानिबो उत्तममध्यमनीच४० ॥
महिकुआलसामिनि असम पाय अनट अपमान ।
तुलसी धर्म न परिहरहिं ते वर सन्तसुजान ४१ ॥

अनहितज्यों परहित किये आपनहित तमजान ।
तुलसीचारुबिचारमति करियकाजसममान ४२ ॥
मिथ्यामाहुरसजनकहँ खलहिं गरल समसांच ।
तुलसीपरसिपरानजिमि पारदपावकआंच ४३ ॥
तुलसीखलबाणी बिमल सुनिसमुभबहियहेरि ।
रामराज बाधक भई मन्द मन्थरा चेरि ४४ ॥
दान दयादिक युद्ध के वीर धीर नहिं आन ।
तुलसीकहहिं बिनीतइति ते नरवर परमान ४५ ॥
तुलसी साथी बिपतिके विद्या बिनय बिबेक ।
साहस सुकृत सत्य व्रत राम भरोसा एक ४६ ॥
तुलसी असमयके सखा साहस धर्म बिचार ।
सुकृतशील स्वभावऋजु रामशरणआधार ४७ ॥
बिद्या बिनय बिबेक रति रीति जासु उर होय ।
रामपरायण सो सदा आपद ताहि न कोय ४८ ।
बिनप्रपञ्चखलु भीखभलि नहिं फलकिये कलेश ।
बामनबलिसोंलीन्हिछलिदीन्हसबहिउपदेश ४९ ॥

बिबुधकाज बामनबलिहि छलो भलो जियजानि ।
प्रभुतातजिबशभेतदपिमनतेगइनगलानि ५० ॥
बढ़े बढ़े ते छल करैं जनम कनौड़े होहिं ।
तुलसीश्रीपतिशिरलसैंबलिबामनगतिसोहिं ५१॥
खलउपकार बिकार फल तुलसी जान जहान ।
मेखटमरकटबणिक बक कथा सत्य उपखान ५२ ॥
ज्यों मूरख उपदेश के होते योग जहान ।
दुरयोधनकह बोधकिन आयेश्याम सुजान ५३ ॥
हितपरबढ़त बिरोध जब अनहित परअपमान ।
रामबिमुखबिधिबामगतिसगुन अघाय अमान ५४॥
साहसही सिख कोपबश किये कठिन परिपाक ।
शठ संकटभाजन भये हठि कुजतीकपिकाक ५५ ॥
मारिसौंह करि खोजलं करि मत सब बिन त्रास ।
भये नीच बिनमीचते जे इनके बिश्वास ५६ ॥
रीक आपनी बूझपर खीझ बिचार बिहीन ।
ते उपदेश न मानहीं मोह महोदधि मीन ५७ ॥

समुझि सुनीत कुनीतरत जागतही रह सोय ।
उपदेशिबो जगाइबो तुलसी उचित न होय ५८॥
परमारथ पथ मत समुझि लसत बिषयलपटान ।
उतरि चिताते अधजरी मानहुँ सतीपरान ५६॥
तजत अमिय उपदेश गुरु भजत विषय बिषखान ।
चन्द्रकिरणधोखेपयस चाटतजिमिशठश्वान ६०॥
सरस दतन तीरथ पुरिन निपट कुचालि कुसाज ।
मनहुँ मवासे मारिकलि राजत सहितसमाज ६१॥
चोर चतुर बटमार भट प्रभु पिय भरुआ भण्ड ।
सब भक्षी परमारथी कलिसुपन्थ पाखण्ड ६२॥
काल गँवार नृपाल कलि जमन महामहिपाल ।
सामनदामन भेदकलि केवल दण्डकराल ६३॥
काल तोपची तुपक महि दारू अयन कराल ।
पाप पलीता कठिन गुरु गोला पुहुमीपाल ६४॥
राग रोष गुण दोष को साक्षी हृदय सरोज ॥
तुलसी विकसतमित्रलखिसकुचतदेखि मनोज६५

बयर सनेह सयान पहि तुलसी जो नहिं जान ।
तेकि प्रेम पग मग धरत पशु बिन पूछ बखान ६६ ॥
रामदास यह जायकै जो नर कथहि सयान ।
तुलसी अपने खांड़ महँ खाक मिलावत श्वान ६७ ॥
त्रिबिधिएकबिधि प्रभुअगुणप्रजहिंसँवारहिं राउ ।
करते होत कृपाण को कठिन घोरघनघाउ ६८ ॥
काल बिलोकत ईश रुख भानु काल अनुहार ।
रबिहि राहु राजहिं प्रजाबुधब्यवहरहि बिचार ६९ ॥
यथा अमल पावन पवन पाप सुसंग कुसंग ।
कहिय सुवास कुवासतिमिकालमहीश प्रसंग ७० ॥
भलउ चलत पथशोच भय नृप नियोगनयनेम ।
कुतिय सुभूषण भूषियत लोहनिवारितहेम ७१ ॥
सुधा कुनाज सुजान पल आम अशन सम जान ।
सुप्रभु प्रजाहित लेहिकर सामादिक अनुमान ७२ ॥
पाके पक ए बिटप दल उत्तम मध्यम नीच ।
फलनरलहहिंनरेशतिमिकरिबिचारमनबीच ७३ ॥

धरणि धेनु चरि धरम तन प्रजा सुवत्सपन्हाय ।
हाथ कछू नहिं लागिहै किये गोष्ठकी गाय ७४॥
टंक टंक ह्वै परत गिरि शाखा सहस खजूरि ।
गरहिकुनृपकरिकरिकुनयसोकुचालभुविभूरि ७५॥
भूमि रुचिर रावणसभा अंगदपद महिपाल ।
धर्म रामनयसीमबल अचलहोततिहुँकाल ७६ ॥
प्रीति रामपद नीतिरत धर्म्म प्रतीय स्वभाय ।
प्रभुहिनप्रभुतापरिहरै कबहुँवचनमनकाय ७७ ॥
करके कर मनके मनहिं बचन बचन जियजानि ।
भूपतिभलाहिनपरिहरहिंबिजयबिभूतिसयानि ७८
गोली बाण सुमन्तसुर समुझि उलटि गति देखु ।
उत्तममध्यमनीचप्रभु वचनविचारविशेखु ७९ ॥
शत्रु सयाने सलिल इव राख शीश अपुनाव ।
बूड़तलखिडगमगतअतिचपरिचहूंदिशिधाव ८०
रख्यत राज समाज घर तन धन धर्म सुबाहु ।
सत्यसुसचिवहिसौंपिसुखबिलसहिंनिजनरनाहु ८१

रसना मन्त्री दशनजन तोष पोष सबकाज।
प्रभु कैसे नृपदानछक बालक राज समाज ८२॥
लकरी डौवा करछुली सरस काज अनुहारि।
सुप्रभुजुगहहिंनपरिहरहिंसेवकसखाविचारि ८३॥
प्रभु समीप छोटेबड़े अचल होहिं बलवान।
तुलसींविदितविलोकहींकरअँगुलीअनुमान८४॥
तुलसी भल बरणतबढ़त निजमूलहि अनुकूल।
सकलभांतिसबकहँसुखददलनसहितबिनफूल८५
सधन सगुण सधरम सगण सजनसुसबलमहीप।
तुलसी जे अभिमानबिन तेत्रिभुवनकेदीप ८६॥
साधनसमय सुसिद्धलहि उभयमूल अनुकूल।
तुलसी तीनोंसमयसम तेमहिमङ्गलमूल ८७॥
रामायण अनुहरत सिख जगभौ भारत रीति।
तुलसी शठकीकोसुनै कलिकुचालिपरप्रीति ८८॥
सुहितसुखद गुणयुत सदा कालयोग दुखहोय।
घरधनजारत अनलजिमित्यागेसुखनहिंकोय८९

तुलसी सरवर खम्भजिमितिमि चेतन पटमाहि ।
नहिंसूखतपनहुतनसो समुझसुबुधजनताहि ९० ॥
तुलसी झगरा बड़ेनके बीच परहु जनि धाय ।
लहै लोह पाहन दोऊ बीच रुई जरिजाय ९१ ॥
अर्थआदिहन परिहरहु तुलसी सहित विचार ।
अन्तगहन सबकहँसुने सन्तनमतसुखसार ९२॥
गहुउपकार विचारपद माफलहानि बिमूल ।
अहो जानु तुलसीयतन बिनजाने इव शूल ९३॥
नीचनिरावहिं निरसतरु तुलसी सींचहि ऊख ।
पोषतपयदसमानजल विषय ऊखके रूख ९४ ॥
लोक वेदहूँ लौंदगी नाम भूल को पोच ।
धरमराजयमराजयम कहतसँकोचनशोच ९५ ॥
तुलसी देवल रामके लागे लाख करोर ।
काकअभागे हगिभरे महिमा भयउ न थोर ९६ ॥
भलो कहहिं जाने विना की अथवा अपवाद ।
तुलसीगाँडरजानिजिय करहुनहरषबिषाद ९७ ॥

तन धन महिमा धर्मजेहि जाकहँ सहज अभिमान।
तुलसीजियतबिडम्बना परिणामहुगतिजान६८॥
बड़ो बिबुध दरबारतें भूमि भूप दरबार।
जापकपूजकदेखियत सहत निरादर भार ६६॥
खग मृग मीन पुनीतकिय बनहु रामने पाल।
कुनइबालरावणघरहिंसुखदबन्धुकियकाल१००।
रामलषण बिजयीभये सुनहु गरीब निवाज।
मुखरबालि रावणगये घरहीसहितसमाज १०१॥
द्वारे टाटन देसकहिं तुलसी जेनर नीच।
निदरहिंबलिहरिचन्द्रकहँकिहुकाकरनदधीच१०२।
तुलसी निज कीरति चहहिं परकीरति कहँखोय।
तिनकेमुंहमसिलागिहैमिटहिनमरिहैंधोय१०३॥
नीच चङ्ग सम जानिबो सुनिलखि तुलसीदास।
ढीलदेतमहिगिरिपरतखैंचतचढ़तअकास१०४॥
सह बीसी कांची भये पुरजन पाक प्रबीन।
कालचेपकिहिबिधिकरैतुलसीखगमृगमीन१०५।

बड़े पाप बाढ़े किये छोटे करत लजात ।
तुलसीतापर सुखचहतविधिपरबहुतरिसात १०६
सुमति निवारहिं परहरहिं दल सुमनहु संग्राम ।
सकल गये तनबिन भयेसाखीयादवकाम १०७॥
कलहन जान बिछोटकरि कठिन परम परिणाम ।
लगतअनलअतिनीचघरजरतधनिकधनधाम १०८
जभे ते भल बूझिबो भलो जीत ते हारि ।
जहांजाइजहँडाइबोभलो जोकरियबिचारि १०९॥
तुलसी तीन प्रकार ते हित अनहित पहिचान ।
बरबस परे परोसबश परेमामलाजान ११० ॥
दुरजन बदन कमानसम बचन बिमुञ्चततीर ।
सज्जन उरबेधत नहीं क्षमासमाह शरीर १११ ॥
कौरव पाण्डव जानिबो क्रोध क्षमा के सीम ।
पांचहिमारि न शैसके सयो निपाते भीम ११२ ॥
जो मधु दीन्हे ते मरे माहुर देउ न ताउ ।
जगजितिहारे परशुधर हारिजितेरघुराउ ११३ ॥

क्रोध न रसना खोलिये बड़खोलब तरवारि ।
सुनतमधुरपरिणामहितबोलबबचनबिचारि ११४
तुलसी मीठो समय ते मांगी मिले जुमीच ।
पुधासुधाकरसमंय बिन कालकूटते नीच ११५॥
पाहीखेती लगन बड़ि ऋण कुब्याज मगखेत ।
वैरआपते बड़नते कियो पांच दुखहेतु ११६॥
रीझ खीझ गुरु देत शिष शिषहि सुसाहब साध ।
तोरिखाय फल होय भल तरु काटे अपराध ११७॥
चढ़ोबबूरहि चंगजिमि ज्ञान ते शोक समाज ।
करमधरमसुखसम्पदातिमिजानिबोकुराज ११८॥
पेट न फूटत बिन कहे कहे न लागत ढेर ।
बोलबबचनविचारयुत समुझिसुफेरकुफेर ११९॥
प्रीति सगाई सकल विधि बनिज उपाय अनेक ।
कलबलछलकलिमलमलिनडहकतएकहिएक १२०

दम्भ सहित कलि धर्म सब छलसमेतव्यवहार ।
स्वारथसहितसनेहसबरुचिअनुहरतअचार १२१
धातु बधी निरु पाधिवर सद्गुरु लाभसुमीत ।
दम्भदरशकलिकालमहँपोथिनसुनबसुनीत १२२
फोरहिं मूरख शिल शदन लागे अढुक पहार ।
कायरकूरकपूतकलिघरघर सरिस उघार १२३ ॥
ज्यों जगदीश तो अतिभलो ज्यों महीश तो भाग ।
जन्मजन्मतुलसीचहतरामचरणअनुराग १२४ ॥
का भाषा का संसकृत विभव चाहिये सांच ।
काम तो आवे कामरी काले करिय कमाच १२५ ॥
बरण बिशद मुक्ता सरिस अर्थ सूत्र सम तूल ।
सतसैया जगकरबिशद गुणशोभासुखमूल १२६॥
वर माला बाला समति उरधारै युत नेह ।
सुखशोभा सरसायनित लहैराम पति गेह १२७॥

भूप कहहिं लघुगुणिन कहँ गुणीकहहिं लघुभूप ।
महिगिरिगतदोउलखत जिमि तुलसी खरबसरूप१२८

दोहा चारु विचारु चलु परि हरि बाद विवाद ।
सुकृतसीमस्वारथअवधिपरमारथमरयाद१२९ ॥

इति श्री मद्गोसाईं स्वामीतुलसीदास विरचितायांसप्तश
तिकायां राजनीतिप्रस्तावबर्णनोनामसप्तमःसर्गः७॥

इति ॥

